वर्ष 47/अंक14/अप्रैल-मई/2023/मासिक

दिल्ली शिक्षा

नए युग में

खुद को अभिव्यक्त करने का माध्यम कला

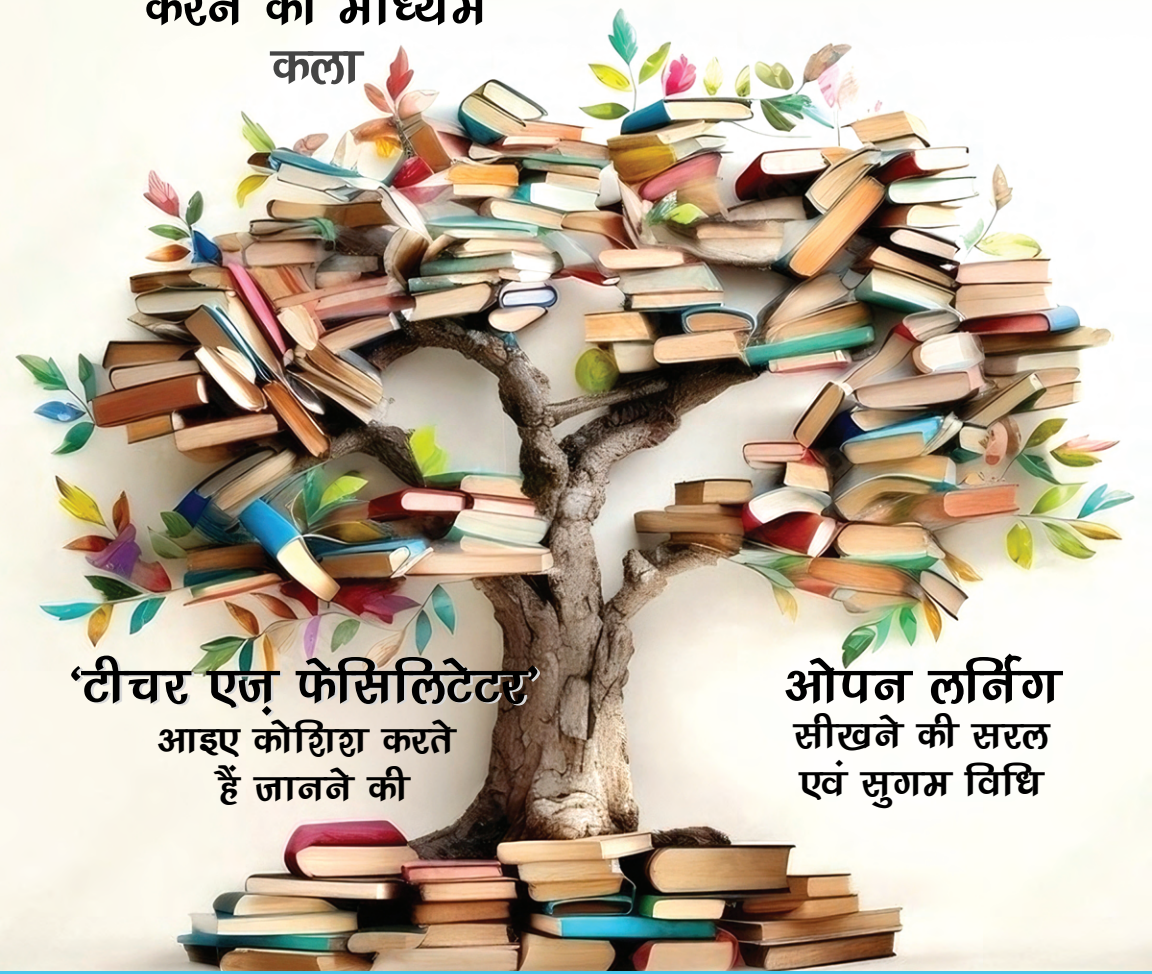

'टीचर एज़ फेसिलिटेटर'
आइए कोशिश करते हैं जानने की

ओपन लर्निंग
सीखने की सरल एवं सुगम विधि

कांत अधिगम प्रक्रिया

#DelhiGovtSchools Our stories on Social Media

Interaction with Student Advisory Board (SAB) General Secretaries and elected SAB members of grade 9th and 11th!

"We are indeed motivated to inject new life into Education of Nigeria," Shared the Kebbi State Team Nigeria delegation after their visit to Delhi Government schools.

Kant; A learning tool!
We are fortunate enough to have with us Sh. H K Gupta, the founder of Kant program.DDE, South (A.K. Tyagi) is leading the initiative in his district!

दिल्ली शिक्षा
नए युग में

विशेष आभार

अशोक कुमार, आईएएस
सचिव, शिक्षा विभाग

हिमांशु गुप्ता, आईएएस
निदेशक, शिक्षा निदेशालय

शैलेन्द्र शर्मा, शिक्षा सलाहकार

संपादक

डॉ बी पी पांडे, OSD, स्कूल ब्रांच

लेआउट डिजाइन

नवीन कुमार श्रीवास्तव
कलाध्यापक

समन्वय

कादंबरी लोहिया
प्रवक्ता, अंग्रेज़ी

संपादकीय मंडल

अक्षय कुमार दीक्षित
टी जी टी, हिंदी

भावना सावनानी
प्रवक्ता, जीव विज्ञान

डॉ नील कमल मिश्र
टी जी टी, प्राकृतिक विज्ञान

रविंद्र कुमार
टी जी टी, प्राकृतिक विज्ञान

रोहित उपाध्याय
टी जी टी, गणित

सुमन रेलन
प्रवक्ता, अंग्रेज़ी

विशेष सहयोग

अंकित सोलंकी
मो अहसान

अंदर के पन्नों पर

01 'टीचर एज़ फेसिलिटेटर' आइए कोशिश करते हैं जानने की (अनीता चितकारा)

04 प्रोजेक्ट वॉइस: वाणी कौशल (सविता कुमारी)

06 देशभक्ति पाठ्यक्रम का सफ़र: विचार से व्यवहार तक (भरत शर्मा)

09 खुद को अभिव्यक्त करने का माध्यम: कला (पंकज तिवारी)

13 ओपन लर्निंग: सीखने की सरल एवं सुगम विधि (डॉ पूनम)

15 Queen's Commonwealth Essay Competition एक प्रयास और सफलता (प्रीति गोयल)

17 ब्राइटर माइंड्स कार्यक्रम कान्हा शांतिवनम् हैदराबाद (डॉ. शैफाली गुप्ता)

20 पूछताछ-आधारित शिक्षण एक प्रभावी रणनीति (सतनाम कौर)

22 मिशन बुनियाद नेटवर्क मीटिंग (सुरभि नागपाल)

25 एस.एम.सी संवाद, समस्याओं का समाधान (मुनेश शर्मा)

27 कांत अधिगम प्रक्रिया (श्वेता सचदेवा)

33 उचित होगा पोषण भविष्य होगा रोशन (सरिता)

35 सचेतन स्वास्थ्य और खुशहाली की कुंजी (सीमा खेत्रपाल)

39 संकाय विकास कार्यक्रम के बारे में मेरे सीखने के अनुभव (राजलक्ष्मी पेगोरिया)

42 हमारे विद्यालय में अंतरराष्ट्रीय दिवसों का आयोजन (डॉ जयभगवान भारद्वाज)

44 एक विद्यालय ऐसा भी (सुमन रेलन)

अनीता चितकारा
टी जी टी गणित,
जी सी एस वी, सेक्टर- 17 द्वारका

'टीचर एज़ फेसिलिटेटर'

आइए कोशिश करते हैं जानने की

आदर्श कक्षा (दृश्य एक)
एक कक्षा जिसमें विद्यार्थी सुन रहे हैं और केवल अध्यापक ही बोल रहा है। एक कक्षा जहाँ पिनड्रॉप साइलेंस है, अध्यापक ब्लैक बोर्ड पर लिख रहे है और बच्चे अपनी पुस्तिकाओं में काम कर रहे हैं।

आदर्श कक्षा (दृश्य दो)
एक दूसरी कक्षा जहाँ विद्यार्थी समूह में गतिविधियाँ कर रहे हैं, कभी जोड़ों में बात कर रहे हैं, कभी एकल कार्य कर रहे हैं। अध्यापक की भूमिका केवल एक सूत्रधार की है।

जी हाँ, यह है नए युग के दिल्ली के सरकारी स्कूलों की कक्षा। चौंक गए ना ? आप जरूर चौंके होंगे, बिलकुल मेरी तरह।
जब पहली बार मैंने सुना- टीचर फैसिलिटेटर की भूमिका में, तो मुझे बिलकुल एहसास नहीं था कि अध्यापक की भूमिका ऐसी भी हो सकती है, जहाँ अध्यापक कम से कम बोले और बच्चों के प्रश्न और जिज्ञासाएँ ही कक्षा को चलाएँ। (Student autonomy) विद्यार्थी स्वयं अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाएँ, बढ़ाने के लिए अग्रसर और उत्सुक हों।

दिल्ली के सरकारी स्कूलों में टीचर – फैसिलिटेटर की भूमिका में

पहली बार यह बात मैंने तब सुनी जब अंत्रप्रेनोरशिप माइंडसेट करिकुलम की शुरुआत हमारे स्कूलों में हुई और मेरी पहली समझ बनी कि किस तरह छोटे समूह में डिस्कशन करके समूह में निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है , उसे बड़े समूह में साझा करना और अलग-अलग समूह में बनी समझ को सुनकर एक निष्कर्ष पर पहुँचना, इंडिपेंडेंट लर्निंग द्वारा निष्कर्ष पर पहुँचने से बेहतर है।

आखिर क्या ज़रूरत है शिक्षण में फैसिलिटेशन की?

विगत कुछ समय में की गई शिक्षण कार्यशालाओं में मेरी इस बात की समझ बनी कि हम सबसे अच्छा तभी सीखते हैं जब हमें स्वयं कुछ सीखने की प्रेरणा होती है न कि तब, जब कोई दूसरा हमें सिखाने के लिए हमारे ऊपर बहुत-सी सूचनाएँ उड़ेल देता है।

बच्चे स्वभाव से ही मित्र बनाने, समूह में रहने, बातें करने, एक-दूसरे से सीखने आदि के लिए उत्सुक होते हैं।

आजकल के सामाजिक परिवेश में एकल परिवार अधिक हो गए हैं तो आज के समाज में हमारे बच्चों को बहुत ज्यादा मित्र, चचेरे, मौसेरे, ममेरे भाई-बहन और संयुक्त परिवार का माहौल नहीं मिल पाता। ऐसे में हम सभी में व्यक्तित्व और मानसिक स्तर में बदलाव आए हैं।

ग्रुप लर्निंग

एक दूसरे की बात को आदर देना, संयम से सुनना, सबके दृष्टिकोण से अवगत होना, फिर किसी विचार पर पहुँचना आदि ऐसी बहुत-सी बातें हैं जो हम समूह में सीखते हैं।

आज के समाज में, जहाँ एक बटन दबाते ही बहुत-सी सूचनाएँ उपलब्ध हैं, सोशल मीडिया द्वारा प्रसारित और प्रचारित सूचनाएँ बहुत-सी घटनाओं को अंजाम भी दे देती है - ऐसे में एक-दूसरे की बात को सुनना, हर दृष्टिकोण को महत्व देना, किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले क्रिटिकल थिंकिंग करके ही निष्कर्ष निकालना, अत्यंत अनिवार्य हो गया है।

ऐसा नहीं कि इंडिविजुअल लर्निंग और थिंकिंग का कोई महत्व नहीं है, अपितु इंडिपेंडेंट थिंकिंग और लर्निंग को समूह में मिलकर दूसरों के थिंकिंग और लर्निंग के साथ अवलोकन करना हमें बहुत ही व्यापक दृष्टिकोण देता है जो ग्रोथ माइंड. सेट विकसित करने की ओर एक बड़ा कदम है।

कक्षा में creative buzz का होना, कक्षा को जीवंत और रोचक बनाना, बच्चों को एक्सप्रेशन का मौका देना, उनको भागीदारी देना अवश्य ही कक्षा में शिक्षा क्रांति की शुरुआत है। हमारे नए कदम जरूर ही एक नया इतिहास रचाएँगे।

दिल्ली के सरकारी स्कूलों की कक्षाओं में टीचर को फैसिलिटेटर की भूमिका को लाने के लिए एससीईआरटी द्वारा शिक्षकों के लिए अनेकों कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है जहाँ हमें Mingle Mingle, Rotation learning stations, Jigsaw, Do now, Frayer's model,Team-Pair-Solo,Quick exit response आदि कई गतिविधियों से परिचित कराया जा रहा है जिन्हें हम अपनी कक्षाओं में ले जाने के लिए बहुत उत्सुक हैं ।

टीम पेयर सोलो जरूर एक बड़ी चुनौती है पर आपसी बातचीत द्वारा, सक्सेस स्टोरी और चैलेंज डिस्कस करते हुए अपने अपने परिवेश में इन गतिविधियों को शामिल करके कक्षा में अध्यापक और विद्यार्थी इनका लाभ उठा सकते हैं।

स्कूलों के प्रधानाध्यापकों को भी इस विषय में क्लस्टर लीडरशिप डेवलपमेंट प्रोग्राम के अंतर्गत इस तरह की शिक्षण गतिविधियों से परिचित कराया जा रहा है ताकि वे भी स्कूल लीडर होने के नाते अपने शिक्षकों को इस भूमिका में सहयोग और सपोर्ट कर सकें ।

मैं बहुत उत्सुक हूँ जल्द ही Teacher को एक Anchor और Facilitator की भूमिका में देखने के लिए, जहाँ टीचर और विद्यार्थी दोनों Learner की भूमिका में होंगे।

सविता कुमारी
राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय (राजा रवि वर्मा)
बी -ब्लॉक , नन्द नगरी

प्रोजेक्ट वॉइस: वाणी कौशल

सीखना एक सतत प्रक्रिया है और यदि हम चाहते हैं कि हमारे विद्यार्थी नित्य कुछ नया सीखें तो शिक्षा निदेशालय के सभी स्टेकहोल्डर्स को निरंतर कुछ नया सीखने और सिखाने में शामिल रहना होगा। शिक्षा निदेशालय छात्रों के संचार कौशल में दक्षता बढ़ाने का लक्ष्य रखता है और इसमें लगातार प्रयासरत रहता है। इसी दिशा में एक सराहनीय कदम था 2022 में प्रोजेक्ट वॉइस की शुरुआत।

प्रोजेक्ट वॉइस कार्यक्रम छात्रों के लिए एक सुरक्षित और अनुकूल स्थान बनाने का प्रयास है जहाँ वे स्कूल में एक साझा मंच पर बिना किसी हिचकिचाहट या झिझक के खुद को अभिव्यक्त कर सकते हैं।

प्रोजेक्ट वॉइस का उद्देश्य तीन गतिविधियों के द्वारा (वाद-विवाद, तात्कालिक भाषण, स्पेल बी कंपटीशन) के माध्यम से छात्रों को अभिव्यक्ति का मौका प्रदान करता है।

हमारे विद्यालय में भी यह कार्यक्रम बहुत उत्साह और ऊर्जा के साथ शुरू किया गया। इस कार्यक्रम के तहत जहाँ हमें अपने कई विद्यार्थियों की स्पीकिंग स्किल्स को जानने का और परखने का अवसर मिला वहीं हमारे छात्रों को भी अपनी वाकपटुता दिखाने का अवसर मिला।

विद्यालय में समय-समय पर प्रोजेक्ट वॉयस के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों में हमारी कई छात्राओं ने अपनी भाषा के प्रवाह और स्पष्टता को नियंत्रित किया तथा शब्दकोश को मजबूत किया।

इसी कार्यक्रम के दौरान हमारी दसवी कक्षा की छात्राओं हंसिका और शैली ने वाद-विवाद प्रतियोगिता में दूसरा स्थान प्राप्त किया और 12वीं कक्षा की छात्रा पारुल ने Extempore में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके उपरांत जोनल लेवल पर हंसिका और शैली ने वाद-विवाद में द्वितीय स्थान और पारुल ने Extempore में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इससे उनका आत्मविश्वास इतना बढ़ गया कि आगे चलकर हंसिका और शैली ने निदेशालय की को-करिकुलर एक्टिविटीज में डिस्ट्रिक्ट लेवल पर डिबेट में प्रथम स्थान प्राप्त किया और स्टेट लेवल पर नामी-गिरामी पब्लिक स्कूलों के साथ प्रतिस्पर्धा की। वही पारुल ने स्टेट लेवल की प्रोजेक्ट वॉइस प्रतियोगिता में भाग लिया।

पारुल कहती है– "इस कार्यक्रम के दौरान मुझे हमारे माननीय शिक्षा निदेशक जी से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ और उन्होंने सभी प्रतिभागियों को घड़ी उपहार में दी। अब मुझे किसी के समक्ष किसी भी विषय को लेकर अपने विचार प्रकट करने में डर नहीं लगता। मैं अपने शिक्षा विभाग की ऋणी हूँ कि उन्होंने प्रोजेक्ट वॉइस कार्यक्रम की शुरुआत की और मुझ जैसे कई बच्चों को आगे आने का मौका दिया।"

शैली के शब्दों में, "हमारे विद्यालय में हुई प्रोजेक्ट वॉइस प्रतियोगिता के द्वारा मुझे और मेरी साथी को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला। हमें जो प्रोत्साहन मिला उसी के कारण हम इतने बड़े लेवल तक पहुँचें और अन्य स्कूल (प्राइवेट, गवर्नमेंट, गवर्नमेंट एडेड) के बच्चों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सके जो हमारे लिए एक सुनहरा मौका था।"

हंसिका के अनुसार उसने सीखा कि कैसे लहजे में भिन्नता ही आपके भावों को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत कर सकती है। सही शब्दों का सही प्रयोग, सही स्थान पर विराम हमारे भाषण को अधिक प्रभावी और सराहनीय बना देता है। उसके अनुसार उसने यह सब कुछ प्रोजेक्ट वॉइस की प्रतियोगिताओं से और उसके बाद मिले फीडबैक से प्राप्त किया।

शिक्षा निदेशालय की इस 'प्रोजेक्ट वॉइस' पहल के कारण ही छात्र-छात्राओं को सीखने के नए आयाम मिले और उनके सपनों को नया रंग मिला। आशा है यह कार्यक्रम इसी प्रकार से हमारे छात्र छात्राओं को लाभान्वित करता रहेगा।

भरत शर्मा
टी जी टी हिन्दी,
रा ० सह शिक्षा उ ० मा० वि० एफ ब्लॉक विकासपुरी

देशभक्ति पाठ्यक्रम का सफ़र: विचार से व्यवहार तक

'जो भरा नही है भावों से बहती जिस में रस धार नही,वह हृदय नही है पत्थर है ,जिस में स्वदेश का प्यार नही' राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी की इन पंक्तियों के मायने हैं कि मनुष्य की जीवंतता का प्रमाण उसके दिल में अपने देश के प्रति निष्ठा और प्रेम ही है।

देशभक्ति से रीते हृदय अपूर्ण व्यक्तित्व का बोध कराते हैं। प्लेटो जैसे विद्वानों ने सदियों पहले ही कह दिया था कि 'शिक्षा का कार्य मनुष्य के शरीर एवं आत्मा को पूर्णता प्रदान करना है जिसके योग्य वह है। यदि विद्यार्थियों के दिलों से देशभक्ति की निरंतर धारा फूट निकले तो ही हम कह सकते हैं शिक्षा अपना कार्य ठीक से कर रही है ।

शिक्षा के इसी कार्य को सफल बनाने के लिए समर्थ पाठ्यक्रम की आवश्यकता बताते हुए सुप्रसिद्ध शिक्षा विद मुनरो कहते हैं कि 'पाठ्यक्रम में वे सब क्रियाएँ सम्मिलित हों जिनका हम शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विद्यालय में उपयोग करते हैं।

देशभक्ति की इस क्रान्तिकारी भावना को हर दिल में स्थापित या पुनर्स्थापित करने के लिए ही महान क्रन्तिकारी भगत सिंह जी के जन्मदिवस, 28 सितम्बर 2021 को दिल्ली के स्कूलों में देशभक्ति पाठ्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इस पाठ्यक्रम के उद्देश्य हैं -

- देश के प्रति प्रेम और सम्मान का भाव पैदा करना।
- अपने व्यवहार में देश प्रेम को अपनाना
- देशभक्ति और देशभक्त जैसे विचारों को स्पष्ट करना।
- एक विद्यार्थी में अपने देश के प्रति प्यार और ज़िम्मेदारी की समझ विकसित करना।

- मूल्यों और कार्यों के बीच अंतर को मिटाना ।
- अपने देश की शक्तियों ,क्षमताओं और चुनौतियों को पहचानना और अपना योगदान तय करने में सक्षम बनाना।
- विद्यार्थियों को इस तरह देश के साथ एकाकार करना कि वे अपनी प्रत्येक गतिविधि को देश के लाभ-हानि से जोड़ कर देख पाएँ।

आज प्रत्येक स्कूल में कक्षा KG से 12 तक यह पाठ्यक्रम बच्चों तक पहुँच रहा है। चर्चा और गतिविधियों से युक्त देशभक्ति की कक्षाएँ विद्यार्थियों के लिए आकर्षण का केंद्र बन रही है ।

यहाँ उन्हें चिंतन और आत्मनिरीक्षण के भरपूर अवसर मिलते हैं। अपने विचारों को सम्मान के साथ रख पाने के कारण उनका आत्मविश्वास बढ़ रहा है। इन कक्षाओं में उपदेश नहीं है, चर्चा है ,सब के लिए अभिव्यक्ति के अवसर हैं।

पाठ्यक्रम को सहजता से लागू करने के लिए कुछ संसाधनों की आवश्यकता होती है। देशभक्ति पाठ्यक्रम में KG से 12 तक शिक्षकों के लिए मैन्युअल तैयार किये गए हैं।

विद्यार्थियों के लिए कोई पाठ्यपुस्तक नहीं है, केवल 100 देशभक्तों की कहानियाँ नाम से एक पुस्तक है जिसे वे सुविधानुसार कभी भी पढ़ सकते हैं। इस किताब में उन गुमनाम देशभक्तों को याद किया गया है जिन्हें या तो भुला दिया गया या जिन के बारे में किसी को पता नहीं है। संसाधनों की उचित उपलब्धता और प्रयोग के क्षेत्र में अभी निरंतर कार्य चल रहा है जिस के परिणाम सकारात्मक ही आ रहे हैं।

यह देश भक्ति पाठ्यक्रम बच्चों में इस बात की समझ बनाने में सफल होता नजर आता है कि हर व्यक्ति अपना काम ईमानदारी से करके भी देशभक्त बन सकता है।

देश के लिए जिन्हें जान देने का मौका मिला वे भाग्यशाली हैं मगर जो देश की तरक्की में बिना किसी लोभ लालच के अपना योगदान दे रहे हैं वे भी देशभक्त हैं।
आप अपने दैनिक जीवन में विभिन्न कामों को ईमानदारी तथा सार्थकता से करके भी देशभक्त बन सकते हैं। पिछले कुछ समय में इस पाठ्यक्रम का असर बच्चों में नज़र आ रहा है।

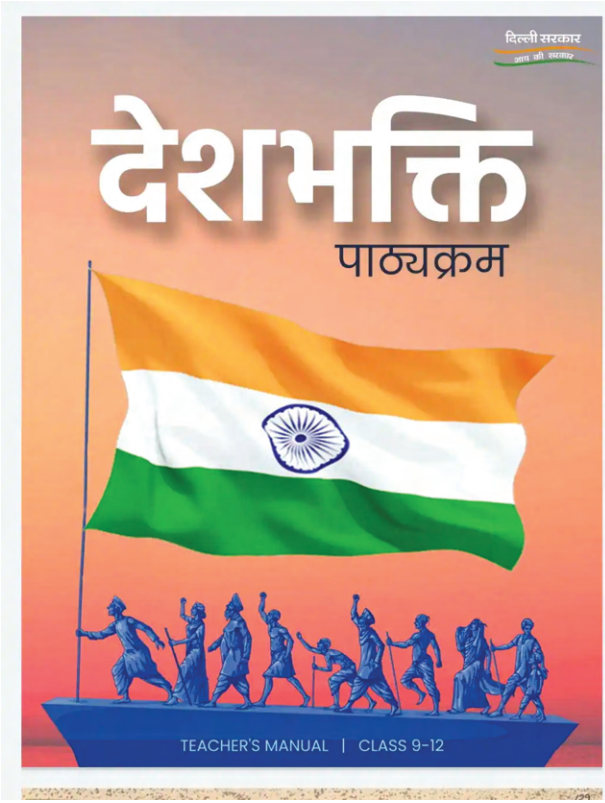

कुंवरसिंह नगर की कक्षा 11 की छात्रा गुरुप्रीत ने कक्षा में पढ़ने में कमजोर साथियों की मदद का जिम्मा ले लिया है और वह नियमित रूप से उन्हे पढ़ाती है।

SBV रनहौला में कक्षा 7 का विद्यार्थी प्रिंस तिवारी अब स्कूल की छुट्टी होने पर घर जाने से पहले अपनी कक्षा की लाइट्स और पँखे बंद करके निकलता है, SBV रनहौला में कक्षा 8 की दीप्ति अपने घर, पड़ोस और स्कूल में पौधे लगाने और उनकी देखरेख करने का महत्वपूर्ण काम कर रही है और पर्यावरण के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी निभा रही है।

देशभक्ति पाठ्यक्रम के द्वारा इन बच्चों में आए बदलाव अब दिख रहे हैं।

इसमें दी गई गतिविधियाँ देशभक्ति ध्यान, देशभक्ति डायरी, क्रांतिकारियों की कहानियों ने बच्चों को न केवल सीखने और समझने का अवसर दिया है बल्कि उनमें देश के प्रति प्रेम और समर्पण की भावना को बढ़ाया है। समय के साथ इसमें और भी सकारात्मक परिवर्तन आ रहे हैं।

GBSSS मदनपुर खादर विद्यालय में वारिस नाम का विद्यार्थी अपनी ईमानदारी का परिचय देते हुए रास्ते में मिला हुआ पर्स अपने प्रधानाचार्य को दे देता है। इसी तरह सर्वोदय सहशिक्षा विद्यालय

दिल्ली के शिक्षा निदेशालय के स्कूलों में देशभक्ति पाठ्यक्रम को सम्मिलित किया जाना एक महत्वपूर्ण कदम है जिससे हम बच्चों की शिक्षा की संपूर्णता और सार्थकता को बना पाने में सक्षम हो पा रहे हैं।

खुद को अभिव्यक्त करने का माध्यम: कला

पंकज तिवारी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (कला)
भाटी माइंस, नई दिल्ली-74

बात अभिव्यक्ति की हो और कला का ज़िक्र न हो यह संभव नहीं है। आज जब शिक्षा में बच्चों से उम्मीद की जाती है कि वे रटे-रटाए उत्तरों से बचते हुए खुद को अभिव्यक्त करें, अपने अनुभवों और शब्दों के माध्यम से उत्तर तक पहुँचें। इसमें कला बहुत ही उपयोगी साबित हो रही है। कला में बच्चों को पूरी आज़ादी होती है।

बंधनों से परे कल्पनाओं में उड़ने की आज़ादी। एक ही विषय पर हर बच्चे अपनी अलग-अलग अभिव्यक्ति देते हैं और आश्चर्य यह कि किसी को भी झुठलाया नहीं जा सकता। बस हमें उनकी कृतियों को उनकी नज़र से समझने का प्रयास करना होगा।

यह बात कोविड के समय की है जब लोग घरों में कैद थे। सभी में डर व्याप्त था। कुछ समय बाद ऑनलाइन कक्षाएँ शुरू हुईं। बच्चों को कला के माध्यम से डर से बाहर निकालने के प्रयास में मैंने वीडियो बना कर कक्षा के ग्रुप में शेयर करना शुरू किया।

चित्र बनाने की विधियाँ एवं कला से संबंधित वीडियो का असर यह हुआ कि बच्चे सब कुछ भूलकर इसी में रमें रहने लगे। सौम्या चौबे, नीतू कुमारी, संजना, खुशबू, प्रिंस, अनुष्का, दिव्या, जितेश ठाकुर जैसे छात्र-छात्राओं ने कला के माध्यम से न सिर्फ खुद को सँभाला बल्कि परिवार वालों को भी कला के बारीकियों और जीवन में कला के महत्व से परिचित करवाया।

बच्चे कला के माध्यम से, अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से समाज के समस्याओं, अच्छे-बुरे को बहुत ही अच्छे तरीके से संजो रहे हैं और उस पर खुल कर चर्चा भी कर रहे हैं। लॉकडाउन के दौरान वीडियो बनाते समय घर में मुझे मेरा बेटा रोज़ देखा करता था।

वह उस समय पहली कक्षा में पढ़ता था। फिर वह मेरे बनाए चित्रों की नकल करने लगा। धीरे-धीरे वह खुद को कला से अभिव्यक्त करने लगा। आड़ी-तिरछी किन्तु निडर स्ट्रोक युक्त रेखाएँ। रंगों का निडरता से प्रयोग उसकी विशेषता बन गई। देखते ही देखते करीब दो सौ चित्रों का संग्रह हो गया उसके पास।

यही बात मेरे विद्यार्थियों में भी देखने को मिली। कभी-कभी अचानक से किसी प्रतियोगिता में जाना होता है। बच्चों से उनकी रुचि के अनुरूप पूछ लिया जाता है। कुछ बच्चे प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए तुरंत तैयार हो जाते हैं। प्रतियोगिता में उन्हें वहीं पर विषय बताया जाता है।

वैसे भी कला की प्रतियोगिता में विषय स्पॉट पर ही दिया जाता है पर छोटे बच्चे भी उस विषय पर गूढ़ रहस्यों से भरी कृतियों का निर्माण कर जाते हैं। पुरस्कृत होना न होना अलग बात है पर उनकी अभिव्यक्ति क्षमता पर अध्ययन किया जाए तो हर बच्चे की कृति में उसकी अपनी एक दुनिया होती है, जहाँ वह खुल कर रंगों से खेलता है, और एक एक से रेखाओं से बतियाने का प्रयास करता है।

क्या बचपन में हम घिर-घिर आये बदरा के रूप को देखकर मोहित नहीं होते? क्या उनके पल-पल बदलते रंग और रूप के साथ अनजाने में ही सही मुँह खोल के अपलक निहारते नहीं रह जाते? कोई भी वस्तु जिसे हम पहली बार देख रहे होते हैं, वह हमारे लिए अमूर्त ही होती है, यह अलग बात है कि औरों के लिए वह मूर्त हो।

अमूर्त की समझ के बाद ही मूर्त की समझ विकसित होती है। बच्चा जब पहली-पहली बार चीजों को समझने का प्रयास करता है अमूर्तन से मूर्तन की तरफ ही बढ़ता है। अमूर्तन है तभी मूर्तन की समझ है, अमूर्तन है तभी रंग और रेखाओं का महत्व है, अमूर्तन है तभी नये सृजन की गुंजाइश है।

इस दुनिया में जितने भी लोग हैं किसी न किसी खूबी से भरे हुए हैं। कोई न कोई विशेषता उनके पास है जो उन्हें औरों से अलग बनाती है। बच्चों के साथ भी यही बात सटीक बैठती है।

बस हम अध्यापकों को उनकी खूबियों को ढूँढना है और उसी ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना है। उन्हें शुरू से ही कुछ नया करने की आजादी देनी है जैसे कि हमारे दिल्ली शिक्षा में पहले से ही चल रहा है कि बच्चों के साथ जजमेंटल नहीं होना है। ऐसा करने पर निश्चित रूप से हम बच्चों से उम्मीद से ज्यादा प्राप्त कर पायेंगे। विषय कोई भी हो आजादी हर जगह चाहिए खोज की गुंजाइश हर जगह है। हमें बच्चों को संवाद का पूरा मौका देना चाहिए।

उनकी बातों पर उनके साथ खुल कर विचार रखना चाहिए। छोटी-छोटी नाटिकाओं के माध्यम से गंभीर से गंभीर विषयों पर कार्यक्रम करवाने चाहिए। पर्यावरण, नशामुक्ति, संस्कृतियों का क्षरण, इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के फायदे और नुकसान जैसे विषयों पर खुले मंच पर वाद-संवाद करवाना चाहिए।

फिल्म 'तारे जमीं पर' इसका एक बहुत ही बढ़िया उदाहरण है। भारतीय कला में चित्रकार राजा रवि वर्मा के योगदान से शायद ही कोई अपरिचित हो। रवि वर्मा मात्र 14 वर्ष के थे जब उनके चाचा एक चित्र अधूरा छोड़ कर कहीं चले गए।

आश्चर्य कि जब वे वापस आए उनका चित्र पूरा हो चुका था। बालक रवि वर्मा द्वारा बचा हुआ चित्र पूरा कर दिया गया था। 14-15 वर्ष की अवस्था में पिकासो के उम्दा चित्र देखकर उनके पिता जो खुद कला अध्यापक थे, ने चित्र बनाना छोड़ दिया था। पेंटिंग संबंधित अपना सारा सामान उन्होंने पिकासो को दे दिया।

बच्चों के चित्र कभी-कभी अमूर्त हो सकते हैं। हो सकता है हम उनके बनाए को समझ न सकें। हमारे न समझ सकने का मतलब यह तो कतई नहीं हुआ कि चित्र ही सही नहीं है। चित्र सही है बस अमूर्त है जहाँ हमें पहुँचना है।

बादलों का उमड़-घुमड़ कर घिरना, पल-पल रंग बदलना एवं नये-नये रूपों में खुद को बदलते रहना क्या वहाँ अमूर्तन नहीं है? बच्चों को उन्हीं के द्वारा सही ग़लत के निर्णय तक पहुँचने हेतु स्वतंत्र छोड़ देना चाहिए। हमें उन गतिविधियों में बिलकुल उदासीन बनकर रहना चाहिए। वहाँ श्रोता और वक्ता दोनों बस छात्र ही रहें।

कुछ वर्ष पहले विद्यालय की पत्रिका हेतु बच्चों से उनका लिखा कुछ आमंत्रित किया गया था। अधिकतर बच्चे किसी और की लिखी कवितायें ला रहे थे जबकि छात्रा खुशबू माँ पर आलेख लिख कर लाई थी।

उसकी लेखनी से उसके अंदर बैठी घबराहट को मैं देख पा रहा था जो हर किसी, जो पहली बार लिखता है के साथ होता है। उसे मैंने प्रेरित किया कि वह यही रचना दुबारा और बिना डरे लिखे।
उसने लिखा और इतना भावयुक्त लिखा कि पढ़ कर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहा जा सका। पाठक को भावुक कर गई थी उसकी रचना। रचना प्रकाशित भी है।

डॉ पूनम
टीजीटी इंग्लिश, सर्वोदय कन्या विद्यालय, पॉकेट-4, मयूर विहार फेज 1

ओपन लर्निंग: सीखने की सरल एवं सुगम विधि

शिक्षा विभाग से प्रतिवर्ष मेंटोर टीचर्स को नेशनल एक्स्पोज़र विजिट प्रोग्राम के तहत अलग अलग राज्यों में भेजा जाता है ताकि वे वहाँ से कुछ अच्छी शिक्षा संबंधी गतिविधियों को देखें, समझें और अपने विद्यालयों में लागू करें।

इसी के अंतर्गत हमें केरल जाने का (मार्च 2022) अवसर मिला।

वहाँ हमने बहुत सी सरल गतिविधियाँ देखी जिन्होंने हमें प्रेरित किया।

केरल राज्य के एक विद्यालय भ्रमण के दौरान मैंने भी कुछ सीखा जिसका वर्णन इस प्रकार है।

नेशनल एक्स्पोज़र विजिट केरल नेमोम विद्यालय बिना किसी तकनीकी सुविधा के बहुत ही उत्तम गतिविधियों द्वारा चलाया जा रहा है जहाँ विजिट करने का अवसर मुझे भी प्राप्त हुआ। मैंने वहाँ बहुत सारी इनोवेटिव तकनीक और शिक्षण सामग्री को नजदीक से देखा। बच्चों द्वारा बनाई गई वॉल माउंट लाइब्रेरी, अखबार की कटिंग से शब्दों को चुनकर बनाई गई वॉल और जमीन पर बना हुआ नंबर का खेल अपने आप में आकर्षण का केंद्र रहा।

यह बड़े आश्चर्य की बात थी कि इस विद्यालय में कोई तकनीकी सपोर्ट नहीं है, कंप्यूटर नहीं है, फिर भी विद्यालय अपने लक्ष्य की ओर निरंतर अग्रसर है। विद्यार्थियों को ओपन लर्निंग गतिविधियों के द्वारा सीखने सिखाने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हमने अपने साथियों के साथ ऑब्जरवेशन करते समय पाया कि वहाँ प्ले ग्राउंड में कुछ बॉक्स बने हुए हैं, और उन बॉक्स पर प्राइमरी के बच्चे कुछ खेल रहे हैं। नजदीक जाकर देखा तो उन बॉक्स में कुछ नंबर लिखे हुए थे और टीचर्स उनको गाइड कर रहे थे कि आपको इस नंबर तक पहुँचना है और बच्चे बताए गए नंबर पर कूद रहे थे। जब मैंने उनके टीचर से बात की तो पूछने पर उन्होंने बताया कि हमारे जो कुछ बच्चे अंको को नहीं पहचान पाते हैं उनके अभ्यास के लिए हम उन्हें यहाँ लाते हैं। खेल के पीरियड में हम बच्चों को संख्या पर कूदना सिखाते हैं। जिससे बच्चों को संख्या पहचानने का बहुत अच्छा अभ्यास हो जाता है।

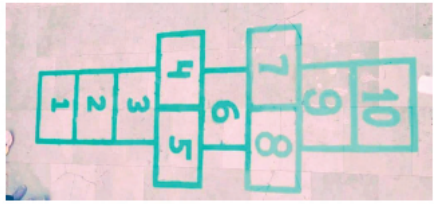

उनकी यह पहल देखकर मुझे भी प्रेरणा मिली और फिर याद आया विद्यालय में चलने वाला मिशन बुनियाद कार्यक्रम। बच्चों को प्रतिदिन गणितीय गतिविधियों में शामिल करने के तरीके केरल नेमोम विद्यालय की तकनीक से प्रेरित होकर मैंने भी अपने विद्यालय, राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय कल्याणपुरी, विद्यालय प्रमुख श्री रामनिवास जी की देखरेख में 1 से 10 तक की संख्या पहचानने के लिए जमीन पर एक खाका बनाकर संख्या पर आधारित खेल चित्र बनाया जिसमें बच्चे 1 से 10 तक सीधी गिनती, 10 से 1 तक उल्टी गिनती, सम संख्या, विषम संख्या , छोटी संख्या, बड़ी संख्या इत्यादि का अभ्यास खेल खेल में करने लगे।

इस शिक्षण सामग्री को बनाने में बहुत ही कम सामग्री का प्रयोग किया गया विद्यालय में रखा हुआ पुराना रंग और एक आयताकार गत्ते की सहायता से आसानी से संख्या खेल चित्र को विद्यालय प्रांगण में जमीन पर बनाया गया।

सूखने के बाद सर्वप्रथम विद्यालय प्रमुख ने खेल कर के दिखाया। फिर विद्यालय के प्राथमिक शिक्षकों ने खेल का आनंद लिया। उसके बाद एक-एक करके हमारे बच्चों ने संख्याओं पर कूद कूद कर खेल को बहुत इंजॉय किया।

अब हमें एक ओपन लर्निंग शिक्षण सामग्री मिल गई जिसमें बच्चे स्वयं ही बिना किसी गाइड के खेल खेलकर नंबर बोल बोलकर सीखने लगे एक से 10 तक की संख्याओं को सिखाने का सहज और आनंददायक तरीका हमारे विद्यालय में एक उदाहरण बन गया। हमने इसे बनाने में विद्यालय की एक समतल सतह और परमानेंट रंग का प्रयोग किया।
यह शिक्षण क्षेत्र पूरी तरह सुरक्षित है और बच्चे लंच टाइम में या खेल के पीरियड में जब भी उनका दिल करता है यहाँ जाकर खेलते हैं और सीखते हैं।

इस पूरी गतिविधि को करते समय मेरे मन में बार-बार यही ख्याल आ रहा था कि यह पूरी प्रक्रिया कितनी सुगम और बिना किसी खर्चे के हो जाती है और लर्निंग को बहुत अधिक प्रभावशाली बना देती है।

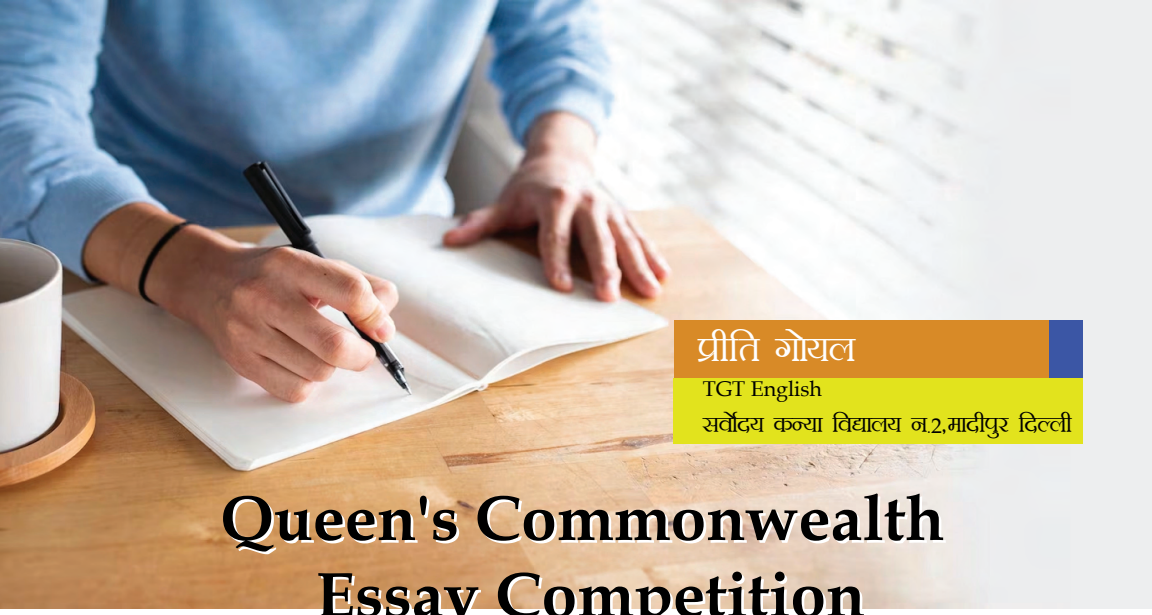

प्रीति गोयल
TGT English
सर्वोदय कन्या विद्यालय न.2,मादीपुर दिल्ली

Queen's Commonwealth Essay Competition

एक प्रयास और सफलता

यह कहानी है एक प्रयास और उसकी सफलता की। यह कहानी है कक्षा दसवीं की छात्रा पलक श्रीवास्तव और मेरी।

मई 2022 में एक सर्कुलर आया Queen's Commonwealth Essay Competition का जिसका विषय था। Commonwealth मैंने अपनी सभी कक्षाओं में इस प्रतियोगिता के विषय में बच्चों को बताया। कक्षा दसवीं की कुछ छात्राओं ने इसमें भाग लेने में रुचि दिखाई तो मैंने सभी छात्राओं को कुछ दिन बाद स्कूल समय के पश्चात ZOOM मीटिंग में एक PPT के माध्यम से निबंध लिखने के उचित प्रारूप को समझाया। सभी छात्राओं ने ध्यानपूर्वक समझकर निबंध लिखने का प्रयास किया और मैंने Whatsapp पर उसकी सभी उत्सुकताओं व प्रश्नों का उत्तर दिया । अंत में एक बार फिर सभी छात्राओं को मैंने स्वयं आपस में मूल्यांकन कर सबसे उचित निबंध के चुनाव के लिए कहा। सभी ने "पलक" के निबंध को चुना जिसके बाद पलक ने अपना निबंध सर्कुलर के निर्देशों के अनुसार प्रतियोगिता के लिए प्रेषित कर दिया।

मेरे लिए यह बहुत बड़ी बात थी कि मेरी छात्राएँ आपस में चर्चा कर निर्णय लेना सीख गई हैं, वह मिलजुलकर एक स्वस्थ भावना से प्रशंसा कर पा रही हैं।
नवंबर 2022 में जब इस प्रतियोगिता का परिणाम आया तो मैंने "पलक" को तुरंत फोन करके बताया कि वह परिणाम देखकर बताए।

"पलक" ने परिणाम देखा और मुझे अपना - "Gold Award" का सर्टिफिकेट भेजा। मेरे लिए वह क्षण ऐसा था जैसे कि मेरी ही परीक्षा का परिणाम आया हो। मैं इतनी खुश आज तक शायद अपनी किसी परीक्षा के परिणाम पर भी नहीं हुई थी।

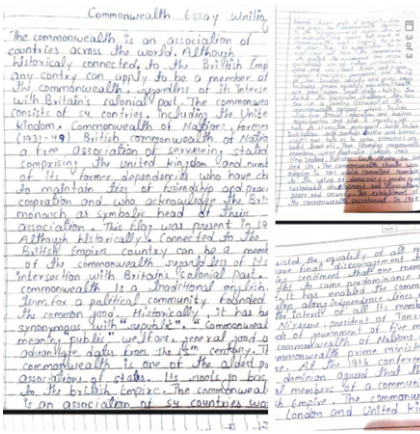

THE QUEEN'S
COMMONWEALTH ESSAY COMPETITION 2022

This is to certify that the Royal Commonwealth Society, on the recommendation of the judges, has awarded this certificate to:

Palak Srivastava

GOLD AWARD

Dr Linda Yueh
Executive Chair
Royal Commonwealth Society

Dr Paul Edmondson
Chair
Senior Judging Panel

Imtiaz Dharker
Chair
Junior Judging Panel

ROYAL COMMONWEALTH SOCIETY

वह कक्षा X "C" जो मुझे जुलाई 2021 में ही मिली थी मैंने सोचा भी नहीं था कि मेरे कुछ प्रयासों से मेरे विद्यार्थियों में से एक को इतना बड़ा पुरस्कार मिलेगा ।

मेरा पुरस्कार तो छात्रों का मिलकर सबसे उपयुक्त का चुनाव करना और उस छात्रा (पलक) का प्रतियोगिता में भाग लेना ही था। एक शिक्षक के छोटे-छोटे प्रयासों से ना जाने कौन सा विद्यार्थी, कब और कहाँ लाभान्वित हो जाए पता नहीं परंतु होते जरूर हैं।

आज मैं DOE में एक मेंटर शिक्षिका के रूप में कार्यरत हूँ परंतु यह असीम स्नेह और प्रेम अब भी मेरे छात्र-छात्राओं द्वारा मुझे मिलता रहता है, यही मेरी पूँजी है - अमूल्य पूँजी।

आज एक नए किरदार में हूँ मेरे दोस्त,
पर फसाना वही है जो पहले था,
कल जो किरदार था वह बच्चों से था,
आज भी जो है वह इन्हीं बच्चों से है ।

ब्राइटर माइंड्स कार्यक्रम
कान्हा शांतिवनम् (हैदराबाद)

डॉ. शैफाली गुप्ता
प्रवक्ता- राजनीति विज्ञान सर्वोदय कन्या विद्यालय मंडोली

कान्हा शांतिवनम् के विषय में

मुझे 17-19 मई 2023 में, शिक्षा निदेशालय की ओर से हार्टफुलनेस ट्रस्ट इंस्टीट्यूट कान्हा शांतिवनम, हैदराबाद की यात्रा का अवसर मिला। इसका उद्देश्य दिल्ली के विद्यार्थियो के लिए ब्राइटर माइंड्स कार्यक्रम को समीपता से जानना था। कान्हा शांतिवनम् अत्यंत ही शांतिपूर्ण, अनुशासित व प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण स्थल है। यह जगह हरियाली, शुद्ध भोजन, शुद्ध रसोई और समर्पित स्वदेशी व विदेशी स्वयंसेवकों से युक्त है। इसे दुनिया के सबसे बड़े ध्यान केंद्र के रूप में भी जाना जाता है।

कान्हा शांतिवनम् का आध्यात्मिक पथ प्रदर्शन पदम भूषण से सम्मानित श्री कमलेश देसाई पटेल जी के द्वारा किया जाता है। इन्हें सभी सम्मान से 'दाजी' के नाम से पुकारते हैं।

ब्राइटर माइंड्स का विज्ञान

ब्राइटर माइंड कार्यक्रम न्यूरोप्लास्टीसिटी और मनोरंजन पर आधारित है। यह माना जाता है कि बच्चों के मस्तिष्क की असीमित संभावनाओं को अत्यधिक जाग्रत किया जा सकता है। बच्चों के मस्तिष्क में बचपन में 80 अरब से भी अधिक न्यूरोन्स होते हैं। सीखने की प्रक्रिया न्यूरॉन्स के बीच संबंधों और पुनर्संबंधों का परिणाम होती है। तंत्रिका विज्ञान में शोध यह साबित करता है कि जैसे हम अपने शरीर के विभिन्न हिस्सों का व्यायाम करते हैं, वैसे ही मस्तिष्क के विभिन्न हिस्सों का व्यायाम संज्ञानात्मक कार्य के कई पहलुओं को बढ़ा सकता है।

यह माना जाता है कि मस्तिष्क का बायाँ भाग तार्किक, तर्कसंगत और गणनात्मक माने जाने वाले कार्यों में और दाहिना भाग कलात्मक, रचनात्मक और सहज कार्यों में सर्वोत्तम होता है। यह कार्यक्रम बच्चों के मस्तिष्क के दोनों भागों में एक संतुलन उत्पन्न करता है। यह प्रत्येक बच्चे की बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक आकांक्षाओं को उत्प्रेरित करता है।

ब्राइटर माइंड्स कार्यक्रम का एजेंडा-

यह 5-15 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए 30 घंटे की अवधि का कार्यक्रम है। इसमें ब्राइटर माइंड्स गतिविधियाँ (सर्कल टाइम, ब्राइटर माइंड एक्सरसाइज, संगीत, डांस, आई बॉल एक्सरसाइज और आँखों पर पट्टी बाँधकर (ब्लाईंड फ़ोल्ड) एक्सरसाइज शामिल हैं। पहले दो दिनों के लिए 4-5 घंटे की गतिविधियाँ अनिवार्य हैं और शेष पाठ्यक्रम को समय की उपलब्धता के अनुसार विभाजित किया जा सकता है। 30 घंटे के इस कोर्स के पूरा होने के बाद छात्र अपना अभ्यास जारी रख सकते हैं।

केस स्टडीज़-

कान्हा शांतिवनम् में बच्चों द्वारा आँखों पर पट्टी बाँधकर की गई गतिविधियों (ब्लाईंड फ़ोल्ड एक्टिविटीज़) को देखकर सभी आश्चर्यचकित थे।

इन गतिविधियों में बच्चे गेंद/किसी अन्य वस्तु के रंग को पहचानने, पुस्तक से किसी भी पाठ को पढ़ने, आरेख को पहचानने, और पहचान पत्र को पढ़ पाने में सक्षम थे। यह हमारे लिए एक चमत्कार जैसा था। हमारे सम्माननीय शिक्षा निदेशक महोदय ने भी कार्यक्रम में भाग लिया और हमें बताया कि वह ब्राइटर माइंड कार्यक्रम के अभ्यासकर्ता भी हैं।

ब्राइटर माइंड्स का विद्यार्थियों पर प्रभाव

विद्यार्थियों की बहुपक्षीय क्षमताओं का विकास होना।
विद्यार्थियों की अंतर्ज्ञान, स्पर्श, महसूस करने, गंध पहचानने आदि इंद्रियों का जागृत होना।
विद्यार्थियों के जीवन में उनके कार्य के प्रति फोकस बढ़ना।
विद्यार्थियों के जीवन में अनुशासन और नवीन प्रवृत्तियों के प्रति रुझान बढ़ना।
विद्यार्थियों का भावनात्मक रूप से मजबूत, शांतिपूर्ण और आत्मनिर्भर होना।

कार्यक्रम का कार्यान्वयन

दूसरे चरण के दौरान मुख्य प्रशिक्षकों ने अपने विद्यार्थियों पर इसके प्रत्यक्ष प्रभाव का आकलन किया। इसका परिणाम देखकर सभी आश्चर्यचकित और मंत्रमुग्ध थे।

कार्यक्रम के तीसरे चरण में शिक्षा निदेशालय के अन्य शिक्षकों (टीडीसी, ईएमसी समन्वयक, प्राथमिक प्रभारी, कला सदस्य आदि) ने विभिन्न स्थानों पर मुख्य प्रशिक्षकों से प्रशिक्षण प्राप्त किया और लाभान्वित हुए।

भावी एजेंडा

भविष्य में इस कार्यक्रम को शिक्षा निदेशालय के सभी विद्यालयों में लागू किया जाएगा और सभी विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। जहाँ जीवन मूल्यों, अनुशासन और आत्मविश्वास से भरपूर नई पीढ़ी को पल्लवित होते देखा जा सकेगा। निश्चित ही, इस कार्यक्रम से लाभान्वित विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों में अपने परिवार, समाज और देश का नेतृत्व करने में सक्षम होंगे।

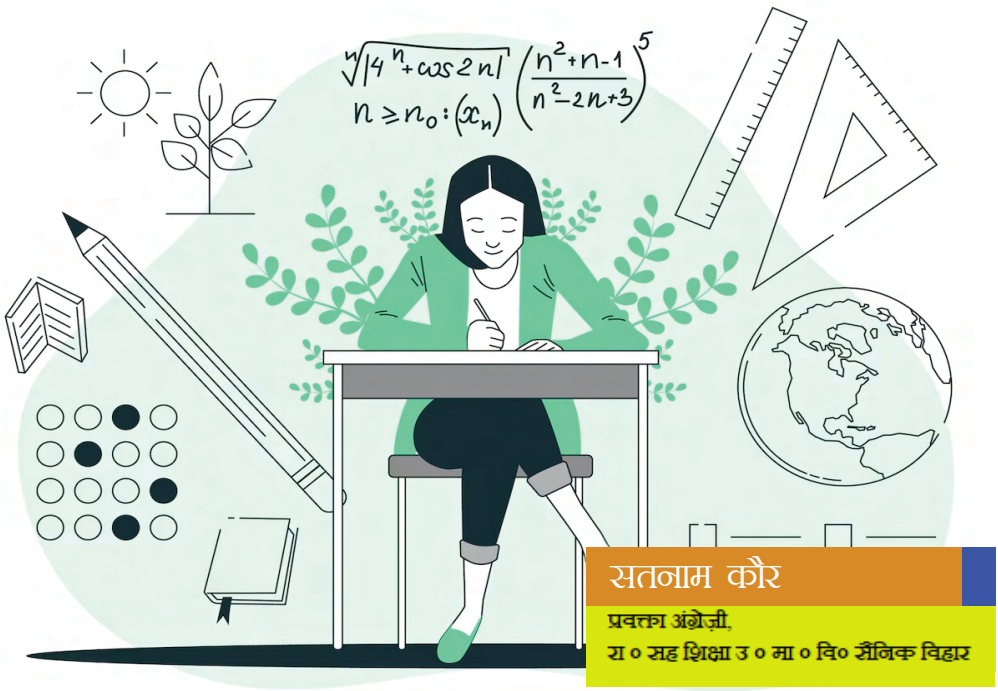

सतनाम कौर
प्रवक्ता अंग्रेज़ी,
रा० सह शिक्षा उ० मा० वि० सैनिक विहार

पूछताछ-आधारित शिक्षण एक प्रभावी रणनीति

पूजा आठवीं कक्षा में पढ़ती थी लेकिन जब भी मैं उसे कुछ पढ़ने को कहती वह, हकलाने लगती, और क्लास के दूसरे बच्चे हँसने लगते, कितनी भी कोशिश करो डर उसके अंदर से जाता ही नहीं था, अकसर अपनी बारी से पहले ही बाहर जाने का प्रयास करती।

एक दिन मैं अपने साथ दो चुंबक और थोड़ा सा लौह चूर्ण ले कर कक्षा में गयी और कागज पर उसे डाल कर पूजा को अपने पास बुलाया।

चुंबक उसे हाथ में दे दिया और उसे लौह चूर्ण पर फेरने के लिए कहा । वह धीरे धीरे चुंबक को फेरने लगी और लौह चूर्ण चुंबक पर चिपकने लगा।

जब दोनों कोनों पर काफी लौह चूर्ण चिपक गया तब मैंने उसे यह बाकी विद्यार्थियों को दिखाने के लिए कहा। फिर मैंने सभी को बताया कि ये कोने चुंबक के पोल हैं।

अब दोबारा इसे लौह चूर्ण पर फेरो और बच्चों को दिखाओ। सिर्फ दिखाना ही तो था ना। ही लिखना ना ही पढ़ना।

अब पूजा को लोहे की दूसरी वस्तुओं को टैस्ट करना था। मैंने पूजा से कहा, देखो क्या क्या लोहे का है? डेस्क में लगा कील, पेंसिल बॉक्स, आल पिन, कम्पास। थोड़ा सा इशारा करने भर से ही वह सभी लोहे की चीजें ढूँढ़ने लगी, लोहे की खिड़की, दरवाजा आदि। सभी बच्चों ने पूजा के लिए ताली बजायी।

यह प्रक्रिया स्वयं कर रहे थे। अब सभी विद्यार्थियों को इस प्रक्रिया का चित्र भी बनाना था। पूजा भी अपनी कॉपी पर चित्र बनाने लगी, मैंने उसे Good भी दिया।

बस अब उस के चेहरे पर हँसी और आँखों में आँसू।अब सभी विद्यार्थी चुंबक और लौह चूर्ण से नये क्रियाकलाप कर रहे थे और पूजा अब आत्म सम्मान के साथ अपनी सीट पर बैठी मुसकुरा रही थी।

सभी बच्चे बार बार पूजा को बुला रहे थे और अपने पास लोहे की वस्तु को चुंबक से टेस्ट करना चाहते थे। अब पूजा हकलाना भूल चुकी थी और हँस हँस कर सब सही बता रही थी। सभी बच्चे लौह चूरण और चुंबक माँग रहे थे और

आज वह अपनी कक्षा में भागीदारी पर संतुष्ट थी और मेरी आज की मेहनत सफल हो चुकी थी। अब वह कक्षा में महसूस कर रही थी। अगले दिन पूजा की आँखें मुझ पर टिकी हुई थी लेकिन मेरी आँखें किसी दूसरी झुकी हुई आँखों वाली पूजा को ढूँढ़ रही थी।

सुरभि नागपाल
सीनियर मैनेजर डिज़ाइन, STIR

मिशन बुनियाद नेटवर्क मीटिंग

मिशन बुनियाद कार्यक्रम पहली बार 2018 में शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य दिल्ली के सरकारी स्कूलों में तीसरी से 9वीं कक्षा में पढ़ने वाले छात्रों की मूलभूत संख्यात्मकता और साक्षरता में सुधार करना है। यह कार्यक्रम राज्य सरकार के मिशन के साथ-साथ एन.ई.पी के मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता को सुदृढ़ करने के बड़े राष्ट्रीय मिशन के साथ संरेखित है।

मिशन बुनियाद के तहत प्रत्येक स्कूल में 90 मिनट की नेटवर्क बैठक आयोजित की गई थी। इस मीटिंग का उद्देश्य था कि शिक्षक मिशन बुनियाद से जुड़ी गतिविधियों पर मिलकर विचार करें एवं उसके कार्यान्वयन के लिए एक योजना बनायें।

टी. डी. सी प्रोग्राम के तहत आयोजित की गयी ये नेटवर्क मीटिंग्स शिक्षकों का एक व्यावसायिक समुदाय है जिसमें वे एक साथ आकर सीखने-सिखाने से संबंधित कक्षा की रणनीतियों पर चर्चा करते हैं!

मिशन बुनियाद पर आधारित इस नेटवर्क मीटिंग के माध्यम से शिक्षकों को एक साथ आकर न सिर्फ सीखने-. सिखाने की प्रक्रिया पर चर्चा करने का मौका मिला बल्कि उन्होंने इस बात पर भी गहरा चिंतन किया कि छात्रों के बुनियादी कौशलों पर किन पहलुओं का प्रभाव पड़ता है।

रमेश मोरवाल (मेंटर टीचर) ने बताया कि इन बैठकों में शिक्षकों ने छात्रों के मूलभूत कौशल को मजबूत करने पर काम करते समय उनके सामने आयी चुनौतियों पर चर्चा की। दीपक मित्तल (मेंटर टीचर), बी.एड डिवीजन ने बैठक में आयी कुछ चुनौतियों को साझा किया, जैसे विविध शिक्षण शैलियों के लिए डिजाइन करने में कठिनाई, छात्रों का संलग्न न होना और छात्रों के व्यक्तिगत समर्थन के लिए पर्याप्त संसाधनों की कमी। उन्होंने आगे बताया कि शिक्षकों ने आपस में विचार विमर्श कर इन चुनौतियों से निपटने के लिए कई समाधानों को ढूँढ़ा जैसे इंटरैक्टिव, प्रासंगिक और आकर्षक शिक्षण सामग्री डिजाइन करना, पीयर लर्निंग को बढ़ावा देना, छात्रों को व्यक्तिगत समर्थन देना, सकारात्मक प्रोत्साहन, नियमित मूल्यांकन और माता-पिता की भागीदारी।

ये सारे समाधान साक्षरता और संख्यात्मक गतिविधियों में छात्रों की रुचि बढ़ाने और मूलभूत कौशलों को मजबूत करने में मदद कर सकते हैं।

टी.डी.सी तनुजा और टीडीसी त्रिवेणी ने साझा किया कि उनकी नेटवर्क बैठकों में सदस्यों ने मिशन बुनियाद कार्यान्वयन के दौरान छात्रों की अनुपस्थिति की चुनौती से निपटने के लिए माता-पिता से समर्थन माँगने पर चर्चा की। टी.डी.सी त्रिवेणी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे इन बैठकों के माध्यम से एक-दूसरे के विचारों को साझा करने और अपने साथियों की तकनीकों को अपनाने का मौका मिलता है।

उन्होंने एक दिलचस्प किस्सा बताया कि प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक, अपने पूर्व अनुभव के आधार पर, मिशन बुनियाद कक्षाओं को प्रभावी बनाने के लिए कठपुतली के तमाशे जैसी आकर्षक रणनीतियों को साझा करते हैं।

छात्रों के बीच मूलभूत कौशल को मजबूत करने के लिए मेंटर भी अपने मेंटी स्कूलों में शिक्षकों के साथ निकटता से काम कर रहे है। रमेश मोरवाल के अनुसार, मेंटर के रूप में वे टी.डी.सी को कोचिंग और सलाह देते हैं तथा शिक्षकों को उनकी कक्षा में मिशन बुनियाद से जुड़ी रणनीतियों और तकनीकों को लागू करने में सहायता करते हैं।

वे इन बैठकों के माध्यम से संसाधनों को व्यवस्थित करने और इंट्रा स्कूल शेयरिंग को बढ़ावा देने का कार्य भी करते रहे।

दीपक मित्तल (मेंटर) ने मिशन बुनियाद कार्यान्वयन के दौरान खुद को एक रोल मॉडल के रूप में देखा और मिशन पर आधारित इन नेटवर्क बैठकों ने उन्हें चीजों को बेहतर ढंग से समझने का मौका दिया। उन्होंने ने यह भी समझा कि शिक्षक इस कार्यक्रम में कैसे योगदान दे सकते हैं।

उन्होंने विशिष्ट रणनीतियों के साथ पाठ योजना का प्रदर्शन किया और बच्चों के बुनियादी कौशलों को मजबूत करने के लिए स्कूल, प्रशासन, शिक्षक और माता-पिता के बीच एक कड़ी का काम किया। आशा मस्सी (मेंटर) ने समझाया, नेटवर्क मीटिंग ने हितधारकों को पिछले वर्ष के मिशन बुनियाद कार्यक्रम के दौरान उनके द्वारा उपयोग की गई सर्वोत्तम प्रथाओं को याद करने और प्रतिबिंबित करने का अवसर दिया।

उन्होंने मिशन के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए कार्य योजना बनाते समय चुनौतियों और संभावित समाधानों के बारे में भी चर्चा की। रोहित उपाध्याय (मेंटर) के अनुसार, यह वास्तव में उस समय की आवश्यकता थी।

सभी मिशन मोड में थे, और मिशन बुनियाद के मुख्य उद्देश्यों को पूरा करने में शिक्षकों के लिए नेटवर्क मीटिंग एक बहुत ही फायदेमंद और स्वागत योग्य कदम था।

यह स्पष्ट है कि नेटवर्क बैठकों के माध्यम से प्रत्येक स्कूल के शिक्षक उन चुनौतियों, रणनीतियों, समर्थन और प्रयासों के बारे में सोच रहे हैं जो यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक हैं कि सभी छात्र मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक मानकों में पीछे न रहें।

समय-समय पर, विभिन्न शोधकर्ताओं और शिक्षकों द्वारा अभ्यास समुदायों (कम्युनिटीज ऑफ़ प्रैक्टिस) पर जोर दिया गया है। वेंगर (1998) ने अभ्यास के किसी भी समुदाय की तीन विशेषताओं को रेखांकित किया - संयुक्त उद्यम (joint enterprise), पारस्परिक जुड़ाव (mutual engagement) और साझा प्रदर्शनों की सूची (shared repertoire)। जैसा कि ऊपर साझा किए गए उपाख्यानों से स्पष्ट है- मिशन बुनियाद पर आधारित नेटवर्क बैठकों के माध्यम से, शिक्षकों को एक साथ आने और अपने-अपने स्कूलों में एफ.एल.एन परिणामों का समर्थन करने की योजना पर चर्चा करने के लिए प्रेरित किया गया। नेटवर्क मीटिंग के सभी सदस्य एक संयुक्त उद्यम यानी स्कूल स्तर पर एफ.एल.एन परिणामों में सुधार के एक सामान्य लक्ष्य के लिए एक साथ आए।

इन बैठकों के दौरान शिक्षकों का सहयोग छात्रों की मूलभूत शिक्षा और उपलब्धियों को बेहतर बनाने पर केंद्रित था। इस बात पर ध्यान दिया गया कि छात्रों का सीखना किसी भी पेशेवर शिक्षण समुदाय का प्राथमिक उद्देश्य है (डुफोर, 2004)।

ये बैठकें केवल शिक्षकों के कौशल को विकसित करने तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि अपने साथियों के साथ छात्रों के सीखने के बारे में सामूहिक चर्चा में शामिल होने का अवसर प्रदान करती हैं। इस प्रकार हमें दिखाती हैं कि शिक्षक सहयोग और पेशेवर शिक्षक समुदाय छात्रों की अकादमिक उपलब्धियों में कैसे योगदान कर सकते हैं। एफ.एल.एन से जुडी चुनौतियों और कोविड काल के बाद एफ.एल.एन को मजबूत करने के मकसद को ध्यान में रखते हुए, एम.सी.डी स्कूलों में ऐसी नेटवर्क बैठकें छात्रों के मूलभूत कौशलों को संबोधित करने में मदद कर सकती हैं और प्राथमिक स्तर से ही शिक्षकों को छात्रों के बुनियादी कौशलों के विकास पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर प्रदान कर सकती हैं।

संदर्भ

डयूफोर, आर. (2004). "व्हाट इस आ प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी ? " एजुकेशनल लीडरशिप , 61, 6-11

वेंगर इ. (1998). कम्युनिटीज़ ऑफ़ प्रैक्टिस: लर्निंग एस आ सोशल सिस्टम. सिस्टम थिंकर्स , 9(5), 2-3.

मुनेश शर्मा
पीजीटी हिंदी, टी डी सी
रा. क. उ.मा. विद्यालय, सुन्दर नगरी

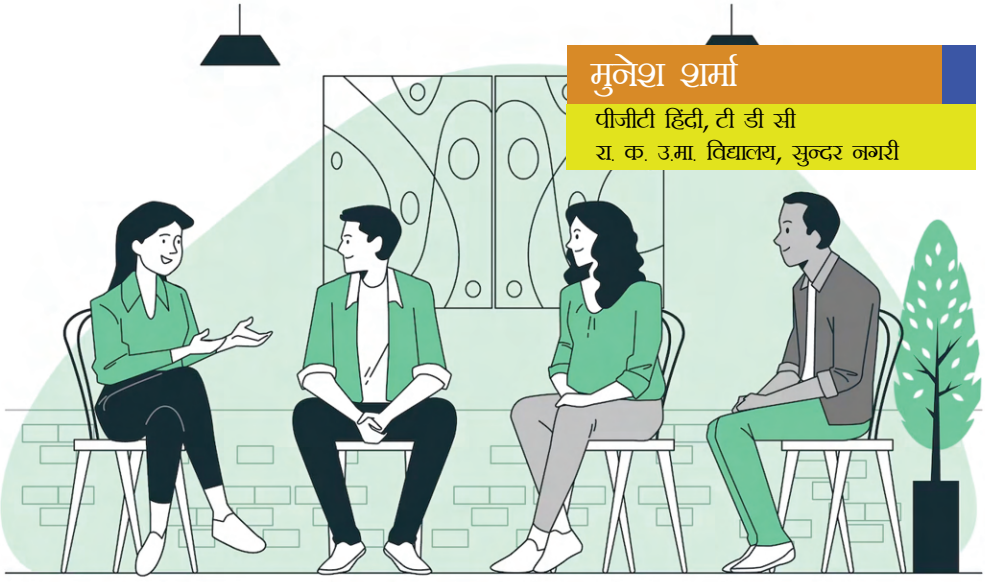

एस.एम.सी संवाद
समस्याओं का समाधान

विद्यालय प्रबंधन समिति (एस.एम.सी.) विद्यालयों की प्रबंधन व्यवस्था में एक अच्छी पहल है जिसमें विद्यालय प्रमुख के साथ मिलकर कुछ चुने हुए अभिभावक स्कूल की विभिन्न तरह की योजनाओं पर मिल बैठ कर निर्णय लेते हैं। लगभग दो वर्ष पूर्व एस.एम.सी.के दायरे को और बढ़ाकर इसमें 'पेरेंट्स् आउटरीच प्रोग्राम' के माध्यम से 'स्कूल मित्र योजनाओं' को जोड़ा गया। दिल्ली सरकार की शिक्षा व्यवस्था का यह एक सराहनीय कदम रहा है। एस.एम.सी. कन्वीनर के रूप में मैंने इस बड़े सकारात्मक बदलाव को प्रत्यक्ष रूप में देखा और समझा है। हमारी विद्यालय प्रमुख जी ने दूर-दृष्टि का परिचय देते हुए प्रारंभ में ही इस कार्यक्रम की महत्ता को समझ लिया था जिससे हमारा सम्पूर्ण विद्यालय परिवार सकारात्मक रूप में इस दिशा में आगे बढ़ा।

विद्यालय के अभिभावकों से ही सहमति के आधार पर निश्चित संख्यानुसार स्कूल मित्रों का चयन किया जाता है जिनके माध्यम से हर एक छात्र के माता-पिता तक पहुँचने और उनके विचारों को जानने-समझने की कोशिश की जाती है। उनकी विद्यालय, शिक्षण को लेकर,व्यवस्थाओं को लेकर क्या राय है, वे क्या चाहते हैं, सभी बातों पर बारीकी से गौर किया गया।

इसका परिणाम यह रहा कि हमें यह जानने का अवसर मिला कि हमारे स्कूल का प्रत्येक अभिभावक विद्यालय में क्या सुधार चाहता है या क्या बातें,योजनाएँ पसंद करता है।

हमने अपने विद्यालय में प्रत्येक कक्षा से एक अभिभावक को 'स्कूल मित्र' के रूप में चयनित किया। इसका अच्छा नतीजा यह रहा कि वह स्कूल मित्र सीधे रूप में कक्षा के सभी अभिभावकों से जुड़ सका और नियमानुसार लगातार सम्पर्क में रहा जिससे छात्रों की उपस्थिति विद्यालय में बढ़ती गयी जो बेहतर परीक्षा-परिणाम का मूल आधार बनी। विद्यालय की भौगोलिक स्थिति के कारण कुछ समस्याओं का सामना भी करना पड़ता था, जिसमें अभिभावकों ने स्वयं आगे आकर 'अभिभावक संवाद' के माध्यम से अपनी बात रखी और समाधान भी किया। इस योजना की सबसे बड़ी बात यह रही कि विद्यालय और अभिभावकों के बीच अनदेखी दूरी को इसने ख़त्म कर दिया। अभिभावक स्वयं आगे बढ़कर आये और स्कूल की विभिन्न व्यवस्थाओं में, देख-भाल, साफ़-सफ़ाई, सौंदर्यीकरण, जागरूकता कार्यक्रम सभी में अपना अमूल्य योगदान दिया। "कोरोना काल' एक व्यवधान की तरह आया लेकिन हम सब उस समय भी ऑनलाइन जुड़कर उस दौरान भी बच्चों और माता-पिता की समस्याओं को जान कर उनका एकजुट होकर समाधान करते रहे। SMC के लिए हर्ष का विषय है कि हमारे विद्यालय के 'पेरेंट्स आउटरीच प्रोग्राम' को एस.एम.सी. डिस्ट्रिक को-ऑर्डिनेटर ने ज़ोन में बेहतरीन स्तर का बताया। स्कूल-मित्रों और अभिभावकों के चेहरे पर 'स्वयं की पहचान का भाव' 'पैरेंट्स आउटरीच प्रोग्राम' की ही देन है। पहले अभिभावक जहाँ संकोची भाव से विद्यालय में आते थे वहीं अब अपनेपन के भाव से स्कूल में प्रवेश करते हैं। एक स्कूल मित्र द्वारा कही गयी यह बात मन को बड़ा खुश कर देती है-"मैडम जी पहले स्कूल आने में डर लगता था कि कोई टीचर कैसे बात करेंगी, प्रिंसीपल मैडम डाँट तो नहीं देगी,लेकिन यहाँ तो सब टीचर बहुत अच्छे हैं, प्रिंसीपल मैडम बहुत प्यार से बोलती हैं, अब डर नहीं लगता। अभिभावक और हम सब अध्यापक एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, यह बात इस कार्यक्रम से स्पष्ट तौर पर साबित होती है।

एस.एम.सी. जहाँ विद्यालय और अभिभावकों के बीच एक पुल के रूप में थी वहीं, 'अभिभावक-संवाद' इस पुल के मज़बूत पिलर बन चुके हैं,जो इसको कभी गिरने नहीं देंगे। कोई भी समस्या संवादहीनता की स्थिति में उत्पन्न होती है और जहाँ संवाद हो वहाँ समस्याओं का समाधान भी मिल ही जाता है।

'अभिभावक-संवाद' निश्चय ही हमारी विद्यालयी शिक्षा-व्यवस्था में 'मील का पत्थर' साबित हुआ है ।

श्वेता सचदेवा
उप प्रधानाचार्य/विद्यालय प्रमुख सर्वोदय कन्या विद्यालय दयानंद मार्ग दरियागंज

कांत अधिगम प्रक्रिया

दिल्ली शिक्षा निदेशालय ने अपने नवाचार एवं नवान्वेषण द्वारा शिक्षा जगत में कई नए प्रतिमान स्थापित किए हैं।

प्रतिदिन विद्यालयों में छात्र-छात्राओं के सीखने की क्षमता में वृद्धि एवं सुधार करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। ऐसे ही प्रयासों में एक मुखर प्रयास है- कांत अधिगम प्रक्रिया। एक ऐसी अधिगम प्रक्रिया जिसे प्राथमिक कक्षाओं के लिए दिल्ली निदेशालय के केवल सौ विद्यालयों में सत्र 2023 में एक पायलट प्रोजेक्ट के अंतर्गत क्रियान्वित किया गया था। किंतु इसके दूरगामी परिणामों को देखते हुए सत्र 2023-24 से इसे दिल्ली के सभी सर्वोदय विद्यालयों में प्रारंभ कर दिया गया।

कांट लर्निंग प्रोसेस वास्तव में एक अनोखी अधिगम प्रक्रिया है जिसमें कक्षा में अधिगम की आवश्यकता को देखते हुए प्रक्रिया को कक्षा के स्तरानुसार क्रियान्वित किया जाता है। यह छात्र-छात्राओं को स्वयं सीखने का अवसर प्रदान करती है।

इस प्रक्रिया में अध्यापक की भूमिका मात्र फैसिलिटेटर की होती है जो छात्रों को सीखने के लिए कक्षा में अनुकूल वातावरण प्रदान करता है और अधिगम को सुगम बनाता है।

इस प्रक्रिया में अधिगम को प्रश्नोत्तरी के माध्यम से संपन्न कराया जाता है। प्रश्नों/समस्याओं का उत्तर/समाधान करने पर छात्र-छात्राओं को एक विशेष प्रकार की अभिप्रेरणा (मोटिवेशन) प्रदान की जाती है। प्रश्नों के उत्तर देने पर छात्र-छात्राओं को अंक प्राप्त नहीं होते वरन् वे एक दूसरे से अपने स्थान को परिवर्तित करते हैं और आगे बढ़ते जाते हैं।

प्रथम पंक्ति में आने पर पंक्ति बदल जाती है। इस स्थान परिवर्तन को सामने लगे एक पिन बोर्ड पर छात्र के नाम के साथ दर्शाया जाता है। प्रश्नोत्तरी का परिणाम जैसे-जैसे आता जाता है छात्र का कक्षा में स्थान भी ऊपर हो जाता है। एक सही उत्तर देने पर दूसरे छात्र से अपने स्थान को वे परिवर्तित करते हैं। यह परिवर्तन क्षैतिज और लंबवत दोनों प्रकार से बारी-बारी किया जाता है।

छात्र का बोर्ड परिणाम जैसे जैसे ऊपर आता जाता है वैसे वैसे कक्षा में भी उसका स्थान ऊपर होता जाता है। यह नाम का ऊपर होना ही छात्र की अभिप्रेरणा का स्रोत है और इसी से अभिप्रेरित होकर वे आगे बढ़ने का तथा और ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। सीखने को सुगम बनाने के लिए कक्षा में शब्दकोश व संबद्ध पुस्तकें भी उपलब्ध कराई जा सकती हैं।

यह प्रश्नोत्तरी कांत द्वारा कई स्तरों पर कक्षा के बौद्धिक स्तर के अनुसार उपलब्ध है। प्रत्येक कक्षा के लिए विशिष्ट स्तर कुछ मानकों के आधार पर तय किया गया है। छात्रों की उपलब्धि के स्तर को और उनकी बौद्धिक क्षमता को देखते हुए इन प्रश्नोत्तरी का चयन कक्षा अध्यापिका द्वारा ऊपर या नीचे किया जाता है।

इस प्रकार यह प्रक्रिया जहां एक ओर छात्रों को नया सीखने का अवसर प्रदान करती है वहीं आगे बढ़ने की अभिप्रेरणा भी देती है। अधिगम प्रक्रिया को प्रेरित करने के लिए सभी सर्वोदय विद्यालयों को तीन टीवी सेट, तीन पिन बोर्ड और तीन पेनड्राइव शिक्षा निदेशालय द्वारा उपलब्ध कराए गए हैं जिन पर प्रश्नोत्तरी को दिखाते हुए छात्र-छात्राएँ अपने कक्षा के स्थान में हुए परिवर्तन को इन बोर्ड पर अंकित कर सकते हैं।

कांत लर्निंग प्रोसेस सभी छात्र छात्राओं के लिए अधिगम के नवीन क्षितिज खोलता है। इसे अन्य सभी कक्षाओं में भी अपनाया जा सकता है। वास्तव में यह शिक्षा निदेशालय द्वारा किए गए उन अभूतपूर्व प्रयासों में से एक है जिनका उद्देश्य छात्र एवं छात्राओं का सर्वांगीण विकास करना है।

कांत अधिगम प्रक्रिया: कुछ अनूठे अनुभव

नीतू राजपूत, पीआरटी
सर्वोदय कन्या विद्यालय
दयानंद रोड, दरियागंज

हमारे स्कूल की कक्षा में कांत प्रक्रिया को लागू करने पर प्रतिक्रिया: हम अपने स्कूल की कक्षा में कां प्रक्रिया के कार्यान्वयन पर प्रतिक्रिया देने के लिए रोमांचित हैं। इस प्रक्रिया ने वास्तव में हमारे छात्रों के लिए सीखने के अनुभव में क्रांति ला दी है और उनके लिए एक आकर्षक और सुखद वातावरण तैयार किया है।

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, हमने कां प्रक्रिया के कार्यान्वयन के दौरान छात्रों के जुड़ाव का जो स्तर देखा वह उल्लेखनीय था। वीडियो गेम से प्रेरित सीखने के माहौल ने शुरू से ही उनका ध्यान खींचा और पूरे सत्र में इसे बनाए रखा। टीवी स्क्रीन पर तेजी से प्रदर्शित क्विज़ ने न केवल उत्साह बढ़ाया बल्कि छात्रों के बीच सक्रिय भागीदारी और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को भी प्रोत्साहित किया।

हमने सीखने के लिए उनके उत्साह में उल्लेखनीय वृद्धि देखी, क्योंकि वे प्रत्येक प्रश्नोत्तरी का बेसब्री से इंतजार करते थे और अपने साथियों के साथ चर्चा में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। मेरिट-आधारित बैठने की व्यवस्था कक्षा की गतिशीलता के लिए एक शानदार प्रोत्साहन था।

योग्यता बोर्ड पर उच्च स्थान अर्जित करने और अपने सहपाठियों के साथ सीटों का आदान-प्रदान करने के लिए छात्रों को अकादमिक रूप से उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया गया।

इस स्वस्थ प्रतियोगिता ने छात्रों के बीच उपलब्धि और मान्यता की भावना को बढ़ावा दिया, जिससे सीखने की प्रक्रिया में उनकी व्यस्तता को और बढ़ावा मिला।

प्रक्रिया के सबसे महत्वपूर्ण लाभों में से एक था निरंतर मूल्यांकन। छात्रों को लगातार विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के साथ चुनौती दी गई, जिससे न केवल उनके विषय ज्ञान में सुधार हुआ बल्कि उनके महत्वपूर्ण सोच कौशल का भी विकास हुआ। 100-150 प्रश्नों के नियमित अभ्यास ने उन्हें विषय वस्तु से अधिक परिचित होने में सक्षम बनाया, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा और आकलन के लिए तैयारी की। हम कांत प्रक्रिया को लागू करने में शामिल शिक्षकों और कर्मचारियों की सराहना करना चाहते हैं।

अच्छी तरह से तैयार की गई क्विज़ को डिजाइन करने, प्रतिस्पर्धी पहलुओं के प्रबंधन और सहायक सीखने के माहौल को बढ़ावा देने में उनके समर्पण और प्रयास ने प्रक्रिया की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। छात्रों की सीखने की यात्रा के प्रति उनका उत्साह और प्रतिबद्धता इस तरह के सकारात्मक और आकर्षक माहौल बनाने में सहायक थी।

अंत में, हमारे स्कूल की कक्षा में कां प्रक्रिया के कार्यान्वयन का छात्र की व्यस्तता और सीखने की प्रक्रिया के आनंद पर परिवर्तनकारी

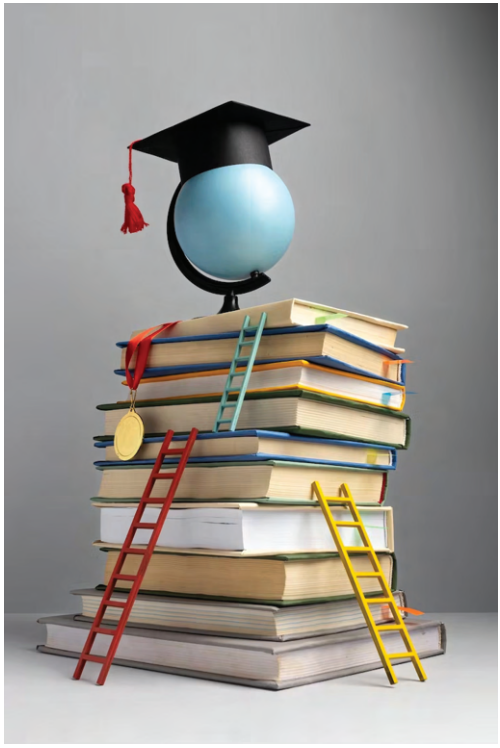

प्रभाव पड़ा है।

वीडियो गेम से प्रेरित वातावरण, निरंतर मूल्यांकन, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, और विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के संपर्क में आने से छात्रों की भागीदारी और उत्साह में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

सुमैय्या रहमान
नोडल इंचार्ज
कांत अधिगम प्रक्रिया
सर्वोदय कन्या विद्यालय
दयानंद रोड, दरियागंज

मैं कां अधिगम प्रक्रिया कार्यक्रम के दौरान आयोजित गतिविधियों के आधार पर एक रोमांचक अनुभव साझा करना चाहूँगी।

इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन ने हमारे पारंपरिक सीखने के माहौल में एक ताज़ा बदलाव लाया और छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए सक्रिय जुड़ाव और आनंद का माहौल बनाया।

कां प्रक्रिया का एक मुख्य आकर्षण हमारी कक्षा में आयोजित तीव्र प्रश्नोत्तरी सत्र था। छात्रों के बीच ऊर्जा और उत्साह स्पष्ट था क्योंकि वे उत्सुकता से टीवी स्क्रीन के आसपास इकट्ठा हुए थे, चुनौतीपूर्ण सवालों से निपटने के लिए तैयार थे। क्विज़ के रैपिड-फायर प्रारूप ने सभी को अपने पैर की अँगुलिओं पर रखा, अनुकूल प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया और त्वरित सोच को प्रोत्साहित किया। छात्रों के दृढ़ संकल्प और ध्यान को देखना अविश्वसनीय था क्योंकि वे सीमित समय सीमा के भीतर सटीक उत्तर देने का प्रयास करते थे।

क्विज़ की इंटरैक्टिव प्रकृति ने एक गतिशील सीखने का माहौल बनाया। छात्रों को न केवल अपने स्वयं के ज्ञान का परीक्षण करने का अवसर मिला, बल्कि अपने साथियों के साथ स्वस्थ चर्चा और बहस में भी शामिल होना पड़ा। कक्षा उत्साह के साथ गुलजार हो गई क्योंकि उन्होंने उत्सुकता से अपने उत्तरों की तुलना की और जीवंत बातचीत में लगे रहे, तर्क और सबूत के साथ अपने दृष्टिकोण का समर्थन किया। कां प्रक्रिया के इस सहयोगात्मक पहलू ने छात्रों के बीच टीम वर्क की भावना को भी बढ़ावा दिया, जिससे एक सकारात्मक और समावेशी सीखने का माहौल बना।

योग्यता आधारित बैठने की व्यवस्था ने कक्षा में उत्साह की एक अतिरिक्त परत जोड़ दी। जैसा कि छात्रों ने योग्यता बोर्ड पर उच्च रैंक हासिल की, उन्होंने उपलब्धि और मान्यता की एक ठोस भावना का अनुभव किया। निरंतर आंदोलन और सीट के आदान-प्रदान ने अकादमिक रूप से उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए उनकी प्रेरणा को और अधिक बढ़ा दिया। गर्व के साथ उनके चेहरे को रोशनी से देखना अद्भुत था क्योंकि उन्होंने गर्व से अपनी नई स्थिति ली, उत्सुकता से अगली चुनौती का अनुमान लगाया।

एक अन्य पहलू जिसने कार्यक्रम की सफलता में योगदान दिया, वह था व्यापक प्रश्न बैंक। 100-150 प्रश्नों के माध्यम से प्रदान की गई प्रथा ने छात्रों को विभिन्न विषयों का पता लगाने और विषय की अपनी समझ को गहरा करने की अनुमति दी।

प्रश्नों की विविधता ने यह सुनिश्चित किया कि छात्रों को पाठ्यक्रम की व्यापक समझ को बढ़ावा देते हुए अवधारणाओं की एक विस्तृत श्रृंखला से अवगत कराया गया। नियमित अभ्यास सत्रों ने न केवल उनके ज्ञान को बढ़ाया, बल्कि उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ाया, क्योंकि वे विभिन्न प्रश्न प्रारूपों और दृष्टिकोणों से अधिक परिचित हो गए।

पूरे कार्यक्रम में, शिक्षकों ने गतिविधियों को सुविधाजनक बनाने और सहायक सीखने के माहौल को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका उत्साह और समर्पण सराहनीय था, जो छात्रों को सक्रिय रूप से भाग लेने और उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करता था। शिक्षकों ने छात्रों को गंभीर रूप से सोचने के लिए प्रोत्साहित किया, समय पर प्रतिक्रिया प्रदान की, और उनकी उपलब्धियों का जश्न मनाया, जिससे छात्रों में सीखने की प्रक्रिया का आनंद बढ़ा।

कांट प्रक्रिया कक्षा कार्यक्रम के दौरान आयोजित गतिविधियों में शामिल सभी के लिए एक अविस्मरणीय और समृद्ध अनुभव प्रदान किया गया। तेजी से क्विज़, सहयोगी चर्चा, योग्यता-आधारित बैठने की व्यवस्था और व्यापक प्रश्न बैंक सभी ने एक जीवंत और आकर्षक सीखने के माहौल में योगदान दिया। छात्रों को सक्रिय रूप से भाग लेने, विचारों को साझा करने और अपने ज्ञान और कौशल में लगातार सुधार करने के लिए प्रेरित किया गया।

इस कार्यक्रम ने वास्तव में सीखने के लिए एक जुनून को प्रज्वलित किया और उनके शैक्षणिक विकास के लिए एक मजबूत नींव रखी।

राशिद खान
नोडल इंचार्ज
सर्वोदय बाल विद्यालय
पटौदी हाउस

जब मैंने कांट अधिगम प्रक्रिया के बारे में सुना तो मुझे प्रतीत हुआ कि यह कोई व्यवहार विश्लेषण प्रक्रिया या कक्षा कक्ष अंतर्व्यवहार प्रक्रिया होगी। इसके तकनीकी आधारित होने की कोई भी संभावना मेरे मन में नहीं थी।

कांट हमारे बच्चों में ऐसी क्षमता विकसित कर रहा है जिस से वे त्वरित और कुशलतापूर्वक समस्याओं को सुलझा पा रहे हैं।

यह सरलतम तकनीकी (टेलीविजन)को प्रयोग में लाता है और बच्चों की क्षमता आधारित प्रगति में प्रशंसनीय परिणाम दे रहा है।

कांट की एक ऐसी खूबी और है जो मुझे व्यक्तिगत रूप से पसंद है और वह यह है कि इसमें किसी प्रकार का इंटरनेट उपयोग में नहीं लाया जाता क्योंकि कक्षा में लाइव इंटरनेट के होने पर हमें अनुपयोगी और निरर्थक विज्ञापनों एवं सूचनाओं का सामना करना पड़ता है जो अनेकानेक बार बच्चों की आयु अनुरूप नहीं होता।

कांट में दी गई कुछ स्क्रीन ऐसी हैं जिनको समझने में बच्चों को थोड़ी समस्या होती है जिन्हें अक्षरों का आकार बड़ा करके एवं रंगों के प्रभावी प्रयोग से दूर किया जा सकता है।

दिल्ली के शिक्षा मॉडल ने पिछले कुछ वर्षों में सरकारी शिक्षा व्यवस्था को अभूतपूर्व रूप से परिवोषित एवम् परिवर्तित किया है और कांट अधिगम प्रक्रिया उसी में जोड़ा गया एक और रत्न है।

आशा है हम आगे इसे बड़ी कक्षाओं के लिए भी उपयोग में लाएँगे विशेष रूप से मिशन बुनियाद जैसे कार्यक्रमों में।

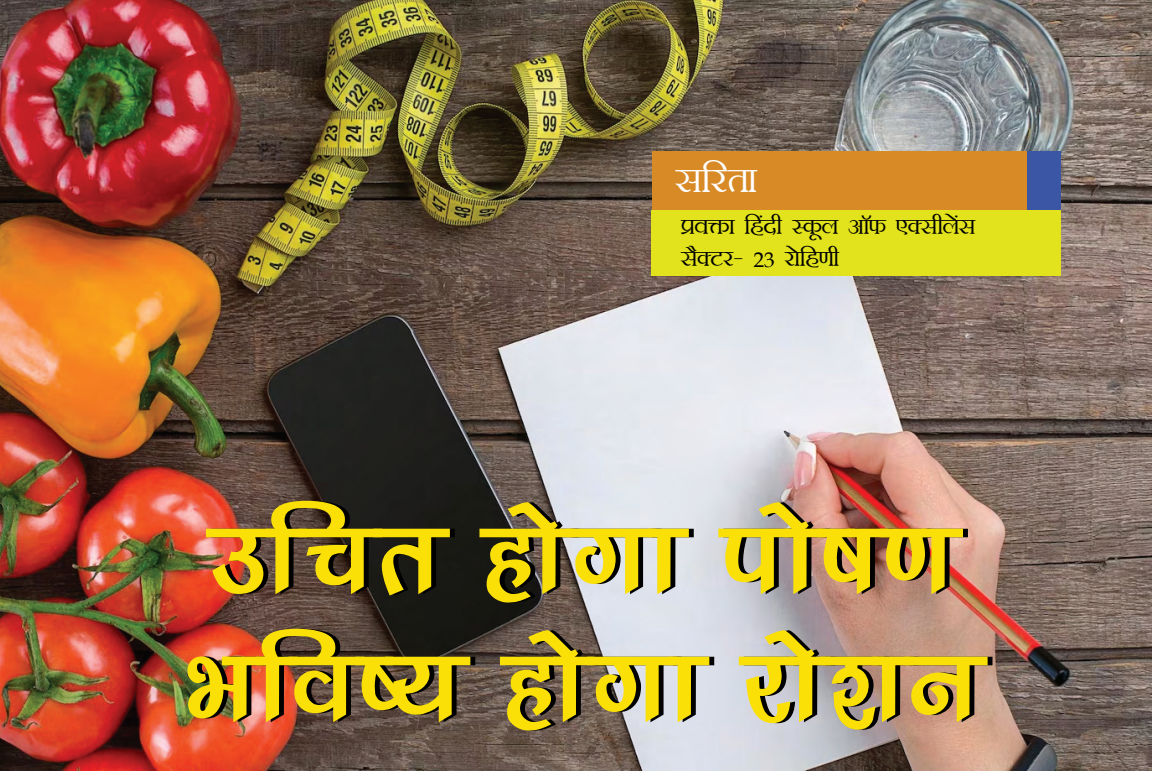

सरिता
प्रवक्ता हिंदी स्कूल ऑफ एक्सीलेंस
सैक्टर- 23 रोहिणी

उचित होगा पोषण भविष्य होगा रोशन

सही पोषण बच्चों के स्वास्थ्य एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्वास्थ्य ही हमारे मानसिक, शारीरिक, सामाजिक उन्नयन को संदर्भित करता है। स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है यह पूर्णत: सत्य है।

स्वास्थ्य के इसी महत्व को देखते हुए दिल्ली सरकार द्वारा दिल्ली के स्कूलों के बच्चों के स्वास्थ्य के आकलन और बेहतर स्वास्थ्य की सुनिश्चितता के लिए विविध कदम उठाए हैं। दिल्ली सरकार द्वारा विद्यालयों में बच्चों के स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए मध्याह्न भोजन योजना, साप्ताहिक आयरन फोलिक एसिड सप्लीमेंटेशन प्रोग्राम, टेबलेट वितरण इत्यादि विभिन्न योजनाओं का संचालन जारी है। इसके बाद भी बच्चों के स्वास्थ्य की स्थिति के आकलन हेतु किए गए सर्वे के नतीजे अधिक उत्साहित करने वाले नहीं पाए गए थे।

नवंबर-दिसंबर 2022 में स्कूलों में बच्चों की ऊँचाई, वजन ,बॉडी मास इंडेक्स (BMI) का अध्ययन किया गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के एंथ्रोप्लस सॉफ्टवेयर के आधार पर निष्कर्षों का विश्लेषण किया गया ।
जिनमें 4,08,033 बच्चों की पहचान कुपोषण के संदिग्ध के रूप में की गई, जो रेड जोन में थे। शिक्षा निदेशालय, दिल्ली के 1030 सरकारी स्कूलों के लगभग 18 लाख छात्रों की स्क्रीनिंग व बीएमआई जाँच 2 श्रेणियों में की गई।

पहली श्रेणी कक्षा 8 तक के विद्यार्थी और दूसरी श्रेणी कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थी। लगभग 4 लाख बच्चों की BMI 18.5 से भी कम पाई गई और लंबाई भी कम आंकी गई। अतः चार लाख विद्यार्थियों की पहचान पोषण के WHO द्वारा प्रमाणित स्तर से नीचे थी। दिल्ली सरकार द्वारा दिल्ली बाल अधिकार संरक्षण आयोग (DCPCR) के सहयोग से छात्रों के स्वास्थ्य व पोषण संबंधी योजना बनाई गयी, सर्वे रिपोर्ट में निदानात्मक कदमों के साथ इसके समाधान हेतु सरकार की लाडली फाउंडेशन के साथ सहकार्यता महत्वपूर्ण कदम साबित हुए।

मध्याह्न भोजन योजना के अंतर्गत कक्षा-1 से कक्षा -8 तक के विद्यार्थी ही लाभार्थी थे, बाकी बच्चे इसमें शामिल नहीं थे। उचित पोषण के प्रति जागरूकता व जानकारी के अभाव में वे अनुचित आहार पद्धति अपनाते हैं। साथ ही कक्षा-1 से कक्षा-8 तक के बच्चों के लिए भी केवल मध्याह्न भोजन की ही सुविधा उपलब्ध थी। सरकार ने विद्यार्थियों के स्वास्थ्य व पोषण संबंधी स्थिति को देखते हुए अपनी चिंता जाहिर की और पोषण अभियान के अंतर्गत सार्थक कदम उठाए।

जिनमें मध्याह्न भोजन में उच्च पोषक मूल्यों के साथ वैकल्पिक व्यंजन शुरू किए गए ;आवश्यक पोषण के साथ ही लंच से 2.5 घंटे पहले 10 मिनट के मिनी स्नैक्स ब्रेक की शुरुआत की गई ।

कुपोषित बच्चों की विभिन्न स्तर पर पहचान की गई और उनके अभिभावकों को सूचित किया गया। अभिभावक परामर्श-सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें उन्हें पोषण के महत्व, पोषक तत्वों से भरपूर व्यंजनों की जानकारी दी गई। उनके बच्चों की पोषण संबंधी आवश्यकताओं के प्रति उन्हे सचेत किया गया ,साथ ही उन्हें कम लागत में उचित पोषण देने वाले व्यंजनों के लिए प्रोत्साहित किया गया और जागरूक किया गया। शिक्षा में प्रदर्शन व विकास पर स्वस्थ आहार के प्रभाव संबंधी परामर्श दिया गया।

पोषण संबंधी अंतर में सुधार के लिए बच्चों को विद्यालय में खाने का एक और मौका दिया गया। मिनी स्नैक्स के लिए साप्ताहिक कार्यक्रम तैयार किया गया जिसमें खाद्य पदार्थों के तीन विकल्पों की पेशकश की गई जिसमें मौसमी फल, अंकुरित अनाज सलाद, भुने चने व मूँगफली शामिल हैं। इसकी ज़िम्मेदारी अनुभवी गृह विज्ञान शिक्षकों को प्रदान की गई, जो बच्चों से जुड़े प्रत्येक पहलू का रिकॉर्ड भी रखेंगे। विद्यालय प्रमुख इसकी नियमित रूप से निगरानी और निरीक्षण करेंगे। साथ ही मध्याह्न भोजन के लिए रसोई गोदामों से कुछ नमूने लेकर नियमित अंतराल पर परीक्षण भी किया जाता है, ताकि गुणवत्तापूर्ण भोजन व निर्धारित पोषण मूल्य से कोई समझौता ना हो।

ज़रूरी शारीरिक व संज्ञानात्मक विकास को बाधित करने वाले तत्वों से निपटने और बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए सरकार का यह प्रयास वास्तव में सराहनीय है और मील का पत्थर साबित होगा।

सीमा खेत्रपाल
उप प्रधानाचार्य राजकीय उच्चतम माध्यमिक कन्या विद्यालय एमबी रोड सेक्टर-1 पुष्प विहार

सचेतन स्वास्थ्य और खुशहाली की कुंजी

जैसा कि हम सब जानते हैं कि "एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है"। उसी प्रकार यह भी सत्य है कि एक स्वस्थ मन अथवा मानसिकता ही एक व्यक्ति, समाज, देश और दुनिया को स्वस्थ बना सकती है।

हमारी मानसिकता व हमारी क्षमता चाहे वह स्वयं के प्रति हो अथवा दूसरों के प्रति उसका स्वस्थ एवं चेतन होना अति आवश्यक है। आज की व्यस्त एवं चिंतित दिनचर्या में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति कुछ समय के लिए माइंड फुल से माइंडफुलनेस की ओर ध्यान दे। छोटा हो या बड़ा आज हर मस्तिष्क में, चेतन एवं अचेतन मन में आवश्यक व अनावश्यक विचार भरे रहते हैं जिस कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

शिक्षा निदेशालय की ओर से विद्यार्थियों को भावनात्मक रूप से स्वस्थ एवं मजबूत बनाने की दिशा में एक सफल एवं सराहनीय पहल माइंडफुलनेस के रूप में की गई है। हैप्पीनेस की कक्षा हो, एंटरप्रेन्योर माइंडसेट पाठ्यक्रम की कक्षा हो या देशभक्ति पाठ्यक्रम हो सभी में माइंडफुलनेस को शामिल किया गया है।

कक्षा के आरंभ में विद्यार्थियों को साँसों पर ध्यान केंद्रित कराना, आसपास की आवाजों पर ध्यान देना, सही प्रकार से साँस छोड़ने व लेने पर ध्यान देना आदि विभिन्न प्रकार के ध्यान जहाँ एक ओर उन्हें स्वयं और अपने आसपास के वातावरण से जोड़ते हैं वहीं दूसरी ओर अनावश्यक विचारों को मन से दूर करते हैं जिससे विद्यार्थी कक्षा में किए जाने वाले कार्यकलापों पर ध्यान दे पाते है तथा सीख पाते है। जब विद्यार्थी स्वयं से जुड़ता है तो वह अपनी कमजोरियों एवं अपने सामर्थ्य दोनों को भलीभाँति जान जाता है तथा उन्हें दूर करने अथवा बढ़ाने के प्रति सजग होता है।

माइंडफुलनेस का प्रभाव विशेष रूप से कोविड-19 के बाद देखने को मिला जिस समय सभी विवश थे, घर की चारदीवारी तक सीमित तथा सोशल मीडिया अपने विभिन्न रूपों में संपूर्ण परिवार व समाज पर हावी था।

विद्यार्थी भी इससे अछूते नहीं रहे, सोशल मीडिया ही उन की पढ़ाई, मनोरंजन, सामाजिक संबंधों का एकमात्र साधन था।

इसका विद्यार्थियों के मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ा। कोविड-19 के जाने के बाद जब परिस्थितियाँ सामान्य हुई तब भी विद्यार्थी सोशल मीडिया की जकड़ में ही थे।

उनका पढ़ाई व अन्य क्रियाकलापों में मन नहीं लगता था। ध्यान बार-बार भटक जाता था, ऐसे में शिक्षकों के सामने भी एक चुनौती थी कि किस प्रकार परिस्थितियाँ सामान्य हों।

अन्य लोगों से लड़ाई करती थी, उनकी बातें सुनना उसे अच्छा नहीं लगता था। आज वह अपने माता-पिता की हर बात को बहुत अच्छे से सुनती व समझती है और यह मानती है कि उसके माता पिता उसकी भलाई के लिए ही उसे समझाते है ।

ऐसे समय में माइंडफुलनेस ने अहम भूमिका निभाई। रोजाना के अभ्यास से विद्यार्थियों में एक सकारात्मक बदलाव देखने को मिला। विद्यार्थियों में पहले की अपेक्षा कक्षा में अधिक सहभागिता व सक्रियता दिखने लगी।

अध्यापिकाओं ने भी पूरी मेहनत व लगन से विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया। विद्यालय की कक्षा सातवीं की छात्रा कोमल जिसका स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा और गुस्सैल था, कक्षा में किसी बच्चे के साथ ठीक से बातचीत नहीं करती थी। माइंडफुलनेस के अभ्यास से आज वह बहुत ही शांत, खुशमिजाज और मिलनसार हो गई है। उसे छोटी-छोटी बातों पर अब गुस्सा नहीं आता और वह अलग अलग स्थितियों को समझने का प्रयास करती है।

प्रीति जो कि अपने माता-पिता से और घर के सातवीं की ही पूजा का कहना है कि पहले उसका मन पढ़ाई में बिलकुल नहीं लगता था और वह ध्यान नहीं दे पाती थी।

लेकिन माइंडफुलनेस के अभ्यास से उसका ध्यान धीरे-धीरे पढ़ाई में लगने लगा तथा इतनी जल्दी से उसका ध्यान नहीं भटकता है।

उसे अपने आस पास का वातावरण पहले से बहुत अच्छा लगता है। ऐसे और भी बहुत से उदाहरण हैं जो दर्शाते हैं कि माइंडफुलनेस करने से बच्चों के अंदर सकारात्मक प्रभाव आए हैं। माइंडफुलनेस से उनके व्यवहार व पढ़ाई में परिवर्तन देखने को मिला है, यहाँ तक कि इन बालिकाओं ने अपने परिवार को भी माइंडफुलनेस कराना आरंभ कर दिया।

विद्यार्थियों से बातचीत करने पर भी हमने यह देखा कि वे यह स्वीकारते हैं कि ध्यान करने पर वे अपने आप को बहुत शांत, ऊर्जावान एवं तनाव रहित महसूस करते हैं, पढ़ते समय उनका मन भी लगता है तथा उनकी स्मरण शक्ति में बढ़ोतरी हुई है।

अध्यापकों को भी इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों से जुड़ने (connect) का सुनहरा अवसर मिलता है, आपसी संबंध बेहतर होते हैं तथा एक विषय पढ़ने के बाद तुरंत दूसरे विषय पर जाने के बीच यह क्रिया बहुत प्रभावपूर्ण है। माइंडफुलनेस की प्रक्रिया को विद्यालय में लाने के लिए इससे जुड़े सभी अधिकारियों, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

माइंडफुलनेस सीखेंगे और ध्यान लगाएँगे,
व्यर्थ की बातों में, मन नहीं भटकाएँगे

सद्गुणों से हम, जीवन अपना महकाएँगे
क्षमा, दया ,कृतज्ञता जैसे गुण हम पाएँगे
कितनी भी हो राह कठिन, पार उसे हम कर जाएँगे

परिवार ,समाज देश –दुनिया को ,
हम खुशहाल बनाएँग

(छात्राओं की भावनाओं एवं निजता को ध्यान रखते हुए उनके नाम बदल दिए गए हैं)

राजलक्ष्मी पेगोरिया
टी जी टी विज्ञान, सर्वोदय विद्यालय
शाहपुर जाट

संकाय विकास कार्यक्रम के बारे में मेरे सीखने के अनुभव

मैं राजलक्ष्मी पेगोरिया हूँ जो हाल ही में सर्वोदय विद्यालय, शाहपुर जाट में टीजीटी प्राकृतिक विज्ञान के रूप में शामिल हुई हूँ।

मुझे 10 मार्च से 15 मार्च 2023 तक एससीईआरटी, दिल्ली द्वारा आयोजित संकाय विकास कार्यक्रम के लिए आईआईटी मंडी जाने का अवसर मिला।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मंडी अन्वेषण और प्लेसमेंट के लिए एक बहुत अच्छा कॉलेज है।

आईआईटी मंडी को IIRF द्वारा बी.टेक रैंकिंग 2022 में भारत के 192 कॉलेजों में से 25वां स्थान मिला। आईआईटी मंडी भारत के सबसे खूबसूरत परिसरों में से एक है।

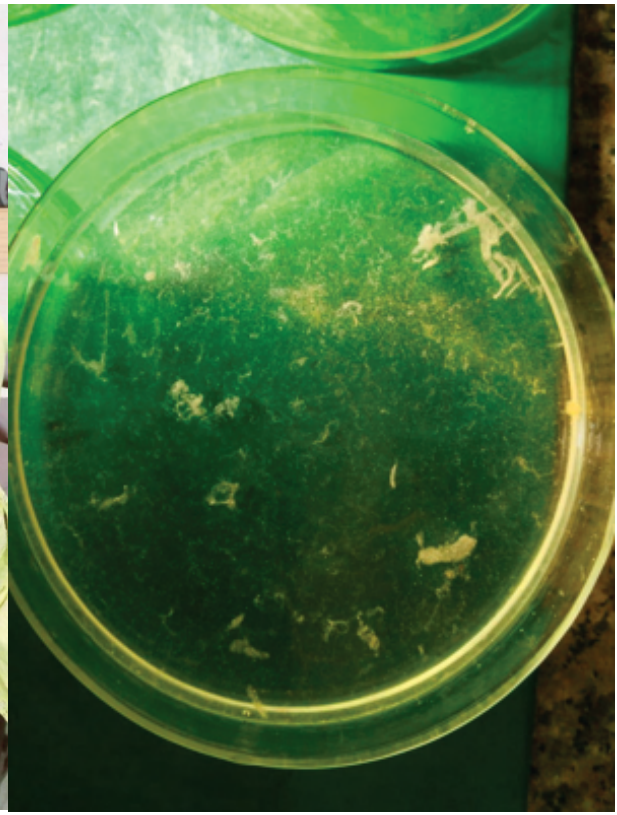

यह हिमाचल प्रदेश में स्थित है और छात्रों को अध्ययन और सीखने के लिए एक वास्तविक शांतिपूर्ण वातावरण प्रदान करता है। पहाड़ी दृश्य मंत्रमुग्ध कर देने वाला और अत्यंत सुंदर है।

पहले दिन की शुरुआत आईआईटी मंडी के सभी संकाय प्रमुख विद्वानों के संक्षिप्त परिचय के साथ हुई, जिसमें जैव विज्ञान, जैव इंजीनियरिंग, भौतिक विज्ञान, रासायनिक विज्ञान और कंप्यूटिंग और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग स्कूल के विभिन्न विभाग प्रमुख शामिल थे।

यह सत्र कलर ब्लाइंडनेस, उत्परिवर्तन और आनुवंशिकता से संबंधित सभी जैसे विभिन्न विषयों पर चर्चा करते हुए बीता। पहला अनुभव निश्चय ही सार्थक, आकर्षक और आनंददायक था।

अगला सत्र डॉ. प्रसाद कस्तूरी द्वारा "जैविक अनुसंधान में जीव मॉडल" विषय पर लिया गया, जिसमें विभिन्न जीवों जैसे ड्रोसोफिला, मेलानोगास्टर, न्यूरोस्पोरा, ई-कोलाई आदि पर चर्चा की गई।

यहाँ मुख्य जीव कैनोर्हैबडाइटिस एलिगेंस नेमाटोड कृमि था, जिसका उपयोग आईआईटी मंडी में अल्जाइमर, पार्किंसंस, डिमेंशिया, हुनलिंग्टॉन रोग जैसे विभिन्न न्यूरोडीजेनेरेटिव विकारों के अध्ययन के लिए एक बड़े पैमाने पर किया जा रहा है।

यहाँ ऐसी कई गतिविधियाँ हुईं जिनमें हमने अपना विषय ज्ञान विकसित किया।

इस प्रशिक्षण के माध्यम से छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के लिए आवश्यक क्षमताओं का वर्धन किया जा सकता है ताकि छात्र विभिन्न तरीक़ों से निष्कर्ष पर पहुँच सकें। वे किसी भी विषय विशेष पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण रख सकते हैं।

शिक्षक छात्रों को कौशल का अभ्यास करने के अवसर प्रदान कर सकते हैं और जहाँ आवश्यक हो, वास्तविक समय पर प्रतिक्रिया और आगे स्पष्ट निर्देश और मॉडलिंग प्रदान कर सकते हैं।

इस प्रशिक्षण से मैंने सीखा कि स्कूली बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण कैसे विकसित किया जाए। मैंने स्वयं भी प्रयोगशालाओं में विज्ञान के प्रयोग करने का आत्मविश्वास प्राप्त किया और यह भी सीखा कि प्रयोगशाला में विद्यार्थियों के साथ विज्ञान प्रयोग कैसे सहज और सरल तरीक़ों से किए जा सकते हैं।

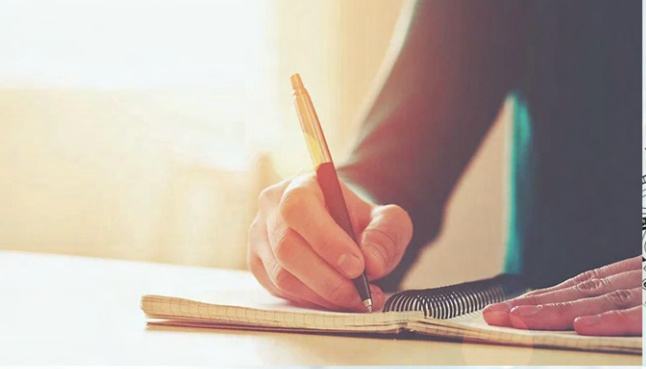

डॉ जयभगवान भारद्वाज
शिक्षक विकास समन्वयक, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय आया नगर

हमारे विद्यालय में अंतरराष्ट्रीय दिवसों का आयोजन

संयुक्त राष्ट्र संघ एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जिसका उद्देश्य राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित करना, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करना और राष्ट्रों के कार्यों में सामंजस्य स्थापित करना है।

शिक्षा निदेशालय, जीएनसीटी दिल्ली छात्रों के वैश्विक ज्ञान को बढ़ाने के लिए अपने स्कूलों को विविध अवसर प्रदान करने का लगातार प्रयास करता है।

इसी कड़ी में माननीय निदेशक, श्री हिमांशु गुप्ता, आई.ए.एस., के निर्देशन में दिल्ली निदेशालय द्वारा हाल ही में एक सर्कुलर जारी हुआ, जिस में अंतरराष्ट्रीय दिवस मनाने के लिए स्पष्ट दिशा निर्देश हैं। इन उद्देश्यों को बढ़ावा देने के लिए, विभिन्न आयोजनों, जैसे प्रातःकालीन सभाओं में चर्चा, प्रभात-फेरी, पोस्टर, वाद विवाद प्रतियोगिताएँ आदि, के माध्यम से, विशेष घटनाओं या विषयों को एक उत्सव के रूप में मनाया जाएगा, जिस से छात्रों को इन उद्देश्यों को समझने, सम्मान करने और सराहना करने में सक्षम बनाने के साथ-साथ, उन्हें वैश्विक घटनाओं से अवगत कराना और एक महत्वपूर्ण और आलोचनात्मक समझ विकसित करने का मार्ग प्रशस्त हो सके। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय आयानगर, नई दिल्ली में इन महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय दिवसों को मनाने का हमारा अनुभव बहुत ही शानदार रहा।

24 जनवरी 2023 को अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा दिवस मनाया गया। शिक्षा एक मानव अधिकार, सार्वजनिक भलाई और एक सार्वजनिक ज़िम्मेदारी है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने संसार में शांति और समृद्धि के लिए शिक्षा की भूमिका को उभारने के लिए 24 जनवरी को अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रुप में घोषित किया है।

विद्यालय में शिक्षाको का शैक्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके शिक्षा के स्तर को और ऊँचा उठाया गया और विद्यार्थियों के लिए विशेष कक्षाओं का संचालन किया गया।

इसी कड़ी में विद्यालय में 7 अप्रैल 2023 को विश्व स्वास्थ्य दिवस, विद्यार्थियों के साथ प्रातःक़ालीन सभा में व्यायाम करते हुए शुरू किया गया।

विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाने का उद्देश्य, समान स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं के बारे में लोगों को जागरूक करना और स्वास्थ्य सम्बन्धी भ्रांतियों और मिथकों को दूर करना है। स्वास्थ्य संगठन विभिन्न देशों की सरकारों को स्वास्थ्य नीतियाँ बनाने और उनके क्रियान्वयन के लिए प्रेरित भी करता है। विश्व स्वास्थ्य दिवस 2023 की थीम हैल्थ फार आल है। सभी लोगों के लिए स्वास्थ्य और स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित करना है।

विद्यार्थियों ने संगोष्ठी के माध्यम से इन चर्चाओं में बढ़चढ़ के भाग लिया। इस विषय पर कक्षाओं में विभिन्न पोस्टर भी बनवा के लगाये गये।

आगे इसी श्रृंखला में 22 अप्रैल 2023 को अन्तर्राष्ट्रीय मातृ पृथ्वी दिवस मनाया गया। विद्यार्थियों की अन्तर कक्षा पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। जलवायु परिवर्तन से प्रकृति में मानव निर्मित परिवर्तन के साथ -साथ जैव विविधता को बाधित करने वाले अपराध जैसे कि वनों की कटाई, भूमि उपयोग परिवर्तन, तीव्र कृषि और पशुधन उत्पादन या बढ़ते अवैध वन्य जीव व्यापार, ग्रह के विनाश की गति को तेज कर सकते हैं।

वर्ष 2023-2030 तक "डिकेड आफ इकोसिस्टम रिस्टोरेशन रिस्टोर" होगा। इसका अर्थ है फिर से नष्ट हुए इकोसिस्टम जैसे ताजा पानी, समुद्री पानी और जमीन के इकोसिस्टमो को पहली जैसी स्थितियों में लाना। इकोसिस्टम में जैविक, जैविक के बीच ही नहीं अजैविक से भी प्रक्रियाँ होती है। वर्तमान में पृथ्वी तीन मुख्य संकटों-जलवायु, प्रकृति और जैव विविधता हानि तथा प्रदूषण और कचरे से घिरी है। जब हम पृथ्वी दिवस मनाते हैं तो हमारी यह जिम्मेदारी बनती है कि हम हवा, पानी व मिट्टी के संरक्षण का संकल्प लें। सजग नागरिक के तौर पर भी हमारी जवाबदेही है कि प्रकृति को देना भी सीखें। यदि हम नहीं जागे तो आने वाली पीढ़ियों के भविष्य से यह खिलवाड़ होगा।

सिलसिला जारी है...

मानव इतिहास में पहले से कहीं अधिक, हम एक समान नियति साझा करते हैं। हम इस पर तभी काबू पा सकते हैं जब हम मिलकर इसका सामना करें।

सुमन रेलन
प्रवक्ता अंग्रेज़ी,
रा० क० उ० मा० वि०, बी ।, वसंत कुंज

एक विद्यालय ऐसा भी

"मानव लक्ष्य- समाधान, समृद्धि, अभय और सहस्तित्व है।" ए. नागराज जी

दिल्ली के दक्षिण में अरावली की तलहटी में बसा एक छोटा सा गाँव है मांडी। दिल्ली शिक्षा के विस्तृत impact को देखने के लिए आज हम मांडी स्कूल में हैं।

यहाँ हम ने स्कूल हैड, टीचर्स, स्टूडेंट्स और सपोर्ट स्टाफ से विस्तृत बात की। बच्चों के मानसिक विकास के साथ साथ उनके सोशल इमोशनल Behaviour में भी बदलाव आ रहे हैं, ऐसा सभी का मानना है।

"जीव चेतना से मानव चेतना में गुणात्मक परिवर्तन ही शिक्षा है।"

- मध्यस्थ दर्शन

गाँव के बाहर सड़क के किनारे एक छोटा सा यह आम सरकारी विद्यालय ही है। लेकिन सुबह का नज़ारा इसे कुछ ख़ास बना देता है। कभी सुबह सवेरे आप यहाँ आयें तो सुबह की प्रार्थना आप के कानों में रस घोल देगी।

बच्चे तेज़ कदमों से स्कूल की और बढ़ रहे होंगे। एक दूसरे का Happy Morning का अभिवादन स्वीकार करते टीचर्स एक क्षण भी वेस्ट किए बिना मॉर्निंग असेंबली का हिस्सा बन जायेंगे।

Happy Morning अभिवादन, यहाँ की हैप्पीनेस समन्वयक नूपुर तिवारी मैम का आईडिया है। स्कूल में जब हैप्पीनेस करिकुलम की शुरुआत हुई तो उसे कैसे एक पीरियड से निकाल कर दिनचर्या का हिस्सा बनाया जाये, इस सोच के साथ, यह सच में जादुई था।
"मेरा आचरण ही मेरा प्रमाण है।", उक्ति यहाँ सत्य प्रतीत होती है।

विद्यालय में पहला पीरियड हैप्पीनेस का है, लेकिन इस समय स्टाफ रूम में उपस्थित वे टीचर्स, जिनका पहला पीरियड ख़ाली है, भी आप को माइंडफुलनेस करते दिख जायेंगे। कोविड के समय में जब बच्चे स्कूल नहीं आ रहे थे और अनिश्चितताओं का दौर था, तब स्कूल फ्रेटरनिटी ने इस पर प्रयोग किए, और अब यह उनकी दिनचर्या का हिस्सा है। स्कूल समाप्ति पर भी फैकल्टी मीटिंग्स से पहले टीचर्स इसकी प्रैक्टिस करते हैं। "ध्यान का अभ्यास आप को आपकी मानसिक क्षमता के बारे में बताता है। यह आप को अंदर से शक्तिशाली बनाता है। ध्यान का उद्देश्य व्यक्तिगत परिवर्तन है।"

समस्त विद्यालय परिवार पूरी निष्ठा से "स्वयं में बदलाव" की इस यात्रा में एक साथ है। विद्यालय में आज, "बच्चों में कुपोषण", विषय पर अभिभावक आमंत्रित हैं। स्कूल हाल में एक विशेष प्रदर्शिनी आयोजित की गई है। स्टूडेंट्स ने पहले दो पीरियड्स कक्षा में अपनी क्लास टीचर्स के साथ Home Science टीचर द्वारा alloted theme पर काम किया और अब वे सब अपनी recipe के साथ इस प्रदर्शिनी में भाग लेंगे। जहाँ वे बाक़ी स्टूडेंट्स, टीचर्स, पैरेंट्स और कम्युनिटी से आये वरिष्ठ लोगों से चर्चा करेंगे।

विभागीय सर्कुलर्स पर काम करते हुए कैसे स्कूल में, एक पर्सनल टच देते हुए, उत्सव का माहौल Create किया जा सकता है, स्कूल प्रमुख श्रीमती एमील डुंगडुंग इसकी मिसाल हैं। 'स्वयं में बदलाव' कैसे स्कूल सेटअप को प्रभावित कर सकता है, इसकी चर्चा करते हुए वे हमें एक प्राइमरी कक्षा में ले गईं, जहाँ Mindfullness का अभ्यास हो रहा था।

बच्चों के बीच उन्होंने स्वयं सभी ऐक्टिविटीज़ में भाग लिया। स्टूडेंट्स के साथ उनकी सहजता और Belongingness एक भावुक दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे। क्लास ऑब्जरवेशन अब क्लास इंस्पेक्शन नहीं रहे, बहुत दृढ़ता से इस पर उन्होंने अपने विचार रखे। मेरी उपयोगिता ही मेरा मूल्य है "हैपीनेस के इस सूत्र पर काम करते हुए, वे स्कूल फ्रेटर्निटी के लिये यथासंभव उपलब्ध तो रहती ही हैं, विभाग द्वारा संचालित नवाचारों को कैसे कम से कम छेड़छाड़ करते हुए Implement किया जा सके, इस के लिए भी प्रयासरत रहती हैं।

लाइब्रेरी, साइंस लैब्स, कंप्यूटर लैब, लगभग हर कक्षा अपनी कहानी स्वयं बयान कर रहा था। यहाँ लाइब्रेरी इंचार्ज मोनिका नागिल से बात करने का मौक़ा मिला। स्टूडेंट्स को Library discipline सिखाना कितना सहज था? "अगर स्टूडेंट्स सिर्फ़ लाइब्रेरी में ही disciplined हैं, तो कैसा discipline?"

उन्होंने वापस सवाल पूछ लिया। हम सेल्फ डिसिप्लिन से शुरुआत करते हैं। शुरुआत में कुछ नियम बनाये जाते हैं, जिन्हें टीचर्स और स्टूडेंट्स मिल के फॉलो करते हैं। जैसे कुर्सी को हमेशा सीधा रखना, सिर्फ़ लाइब्रेरी में नहीं, स्टाफरूम, कंप्यूटर रूम, ऑफिस, घर, हर जगह। रिजल्ट आप स्वयं देखें और जाँचें। "इस डिस्कशन के बाद हम ने भी चलते समय अपनी कुर्सी वापस लगा दी।

सोम भाई की बात यहाँ एकाएक सार्थक होती प्रतीत हुई, "मानव सही में एक, और गलती में अनेक है। वह गलती करने का अधिकार ले कर पैदा होता है, लेकिन सही करने का अवसर एवं साधन ले कर जन्मता है।"

पूरा विद्यालय "No Anger zone" है। लेकिन अगर गुस्सा आ ही रहा है तो क्या? आर्ट्स रूम, स्पोर्ट्स रूम, CWSN रूम, म्यूजिक रूम, सभी कॉरिडोर्स और विशेष कॉर्नर्स इस तरह डिज़ाइन किए गये है, जहाँ स्टूडेंट्स के साथ कई तरह की ऐक्टिविटीज़ प्लॉन की जा सकती है।

ये ऐक्टिविटीज़ दोनों तरह की हैं। टीचर्स के साथ भी और अकेले भी। अगर स्टूडेंट स्वयं के साथ कुछ टाइम बिताना चाहता है, तो उसे आर्ट रूम में अकेले छोड़ दिया जाता है। यहाँ ड्राइंग, पेपर मोल्डिंग, मैडिटेशन कॉर्नर, आदि कई कार्यकलाप हैं, जिन के बारे में स्पेशल असेंबली और क्लास टॉक्स में चर्चा होती रहती है।
एक कोने में सजा के रखे गये एक बॉक्स पर हमारी नज़र पड़ गई, "परेशानियों का पिटारा"। हैप्पीनेस समन्वयक श्रीमती नूपुर ने लगभग सभी क्लासेज़ में एक ऐक्टिविटी करवायी थी, और अब हर विद्यार्थी जानता है, कि Crisis के समय कैसे हम दूसरों की मदद ले सकते हैं। और अगर वह चाहे तो अपनी परेशानी को इस बॉक्स में लिख के छोड़ दे। महीने के कुछ विशेष दिनों में यह भी चेक किया जाता है, स्टूडेंट्स ने इसमें क्या लिखा। शुरुआती दिनों में स्टूडेंट्स काफ़ी पर्सनल बातें भी शेयर करते थे। धीरे धीरे वे खुद ही solutions भी लिखने लगे। और अब तो कुछ थैंक्यू नोट्स भी मिल जाते हैं, कैसे वे अपनी प्रॉब्लम्स खुद ही हल करना भी सीख रहे हैं।"समझ है तो गलती नहीं, गलती है तो समझ नहीं।"
आठवीं क्लास के बच्चे जो काफ़ी सालों से हैप्पीनेस करिकुलम से जुड़े हैं, इसे हैप्पीनेस क्लास के बजाए समझदारी बढ़ाने की क्लास मानते हैं। जहाँ उन्हें सही-ग़लत और जीवन के सही नज़रिए को परखने की सीख मिलती है। आठवीं क्लास की अंशु से हमने बात की। वह मानती है कि अभी तक जैसा उनके बड़े कहते थे या जो मानते थे, हम उसी नज़रिए को बिना चेक किए अपना लेते थे मगर अब थोड़ा जाँच कर अपनाते हैं कि उसका असर समाज के बाक़ी लोगों पर कैसा पड़ रहा है।
"मानव का अध्ययन ही शिक्षा का मानवीकरण है, और परिवार ही तमाम ज्ञान की प्रयोगशाला है।"
ए. नागराज जी

TDC सविता बाटला, मैथ्स टीचर हैं। स्वयं पर काम करते हुए, सब से पहले चैलेंज स्वीकार करना उनकी विशेषता है। दिव्यांग स्टूडेंट्स के साथ उन्होंने मिशन बुनियाद कार्यक्रम में वॉलेंटियर करते हुए कई प्रयोग किए जिनके सुखद परिणाम प्राप्त हुए। CWSN इंचार्ज के साथ Align हो कर आज भी वे Inclusive education पर नित नए प्रयोग करती रहती हैं।

मैथ्स पार्क एक थीम बेस्ड पार्क है, जिस की अवधारणा ही है, मैथ्स का डर, छू-मंतर! पूरी दिल्ली में, United Way NGO द्वारा कराये गये एक कम्पटीशन में टीडीसी सविता ने भाग लिया और स्कूल के लिए इसे जीता। एनजीओ ने स्कूल की ज़रूरतों के हिसाब से इसे डिज़ाइन किया और पूरा खर्च भी उठाया। रोचक बात यह है कि सविता जी ने दो बार जीवन विद्या शिविर भी अटेंड किया है और अपनी पूरी एनर्जी का क्रेडिट जीवन विद्या की अपनी लर्निंग्स को देती हैं।

मेंटर टीचर की भूमिका के तहत बेहतर कनेक्ट, सहज संवाद और Promote Culture of Appreciation" में, मैं भी अपनी भूमिका तलाश पायी, यह मेरे लिये भी गर्व की बात है।

प्रत्येक मानव जन्म से जिज्ञासु, न्याय का याचक, सत्य-वक्ता तथा सही कार्य व्यवहार चाहने वाला होता है। आहार, विहार व्यवहार ही व्यक्तित्व है।

मध्यस्थ दर्शन की यह सूक्तियाँ यहाँ सच में चरितार्थ हैं।

#DelhiGovtSchools Our stories on Social Media

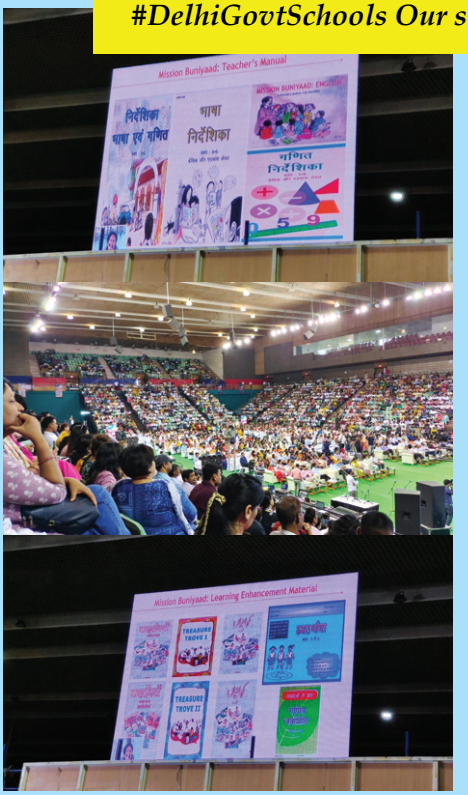

English Language will also be the part of #MissionBuniyad in our schools for the session 2023-24

#DelhiArtsCurriculum
The report is launched today by Education Minister

#InternationalMotherEarthDay

Exploring Jnana Prabodhini, Pune with this dream in our eyes!

State Level Project Voices Competitions are being organised today at GSBV, Rouse Avenue

#DelhiGovtSchools Our stories on Social Media

Hon'ble Chief Justice of Delhi High court Sh. Satish Chandra Sharma along with other dignitaries graced the event of closing ceremony today at Tyagraj Sports Complex.

Exciting news for the Fulbright Alumni Network Scheme (FANS)!
We're thrilled to welcome Taryn Williams, a visiting #Fulbright Fellow from Alaska, USA.
On this occasion, the worthy Director, Sh. @gupta_iitdelhi congratulated FANS members for their extraordinary work.
@USIEF

We've celebrated our children with #SpecialAbilities.

हिमांशु गुप्ता की ओर से शिक्षा निदेशालय के लिए और लक्ष्मी स्टोर, बी-1606, शास्त्री नगर, दिल्ली-52 पर मुद्रित और शब्दार्थ , सूचना एवं प्रचार निदेशालय दिल्ली सरकार, पुराना सचिवालय , दिल्ली से प्रकाशित संपादक - डॉ बी. पी. पांडे

RNI Reg No. 23771/71
Magazine Post Registration Number DL(DS)-44/MP/2022-23-24

दिल्ली शिक्षा के पुराने अंक आप निरूशुल्क ऑनलाइन भी पढ़ सकते हैं।
दिल्ली शिक्षा को ऑनलाइन पढ़ने के लिए इस लिंक पर जाएँ
https://fliphtml5-com/bookcase/jlddc"